प्रकाशक—
अ० भा० राष्ट्रीय साहित्य
प्रकाशन परिषद्,
मेरठ।

प्रथमावृत्ति— नवम्बर १९५१

मूल्य तीन रुपये

मुद्रक—
मदन मोहन बी. ए.
निष्काम प्रेस,
मेरठ।

'मित्र'

इन गीतों की आत्मा अतृप्ति है, पृष्ठभूमि मृत्यु, और जीवन आलोक। प्यार पूजा के लिये परिक्रमा करता रहा। दुःख ने उसे स्वर दिया, श्रद्धा ने आरती उतारी, पर प्रतिमा न जाने क्या चाहती है!

आशा और जिन्दगी का साथ है। जिज्ञासा जीवन को गति देती है। दार्शनिकता के उजाले में आशा का हर स्पन्दन साधन है और रहस्योद्‌घाटन सिद्धि। मैं सिद्धि की आशा लिये साधना के पथ पर चल रहा हूँ।

रहस्य क्या कभी खुलेगा। आशा क्या कभी अशेष होगी! जीवन की आलोचना क्या कभी पूर्ण दर्शन बन सकेगी!

पता नहीं प्रश्न और चित्र कब पूरे होंगे। हर श्वास में नयी अनुभूति होती है, अनुभूति प्रकट होने को पथ टटोलती है, विस्तार बढ़ता ही जाता है, निराशा बस कहती है, पर विश्वास वही है जो विजय के लिये लड़ता ही रहे।

यह विश्वास ही मेरे गीतों का पथ है। भावना मेरे गीतों की रानी है। कल्पना मेरे गीतों की उड़ान है। और बुद्धि जीवन-ज्योति।

प्रकृति ने गीतों के साथ गाया। कला ने गीतों को सौन्दर्य से सजा संसृति को रूप दिया, तभी तो गायक का स्वर शेष संसार में मुखर हो उठा।

गायक इसलिये गाता है कि सत्य स्वप्न न रहे, असुन्दर सुन्दर हो जाये, आँसुओं को आधार मिले, अमृत और आनन्द में हृदय लय हो।

अत. मैं गाता रहा। मैंने तब गाया जब स्वप्न देख रहा था, और उस समय भी गाता रहा जब स्वप्न भंग हो गया। मैं तब भी अतृप्त था जब आधार था और अब भी अतृप्त हूँ जब आधारहीन हो गया। तो क्या मैं अतृप्त ही रहूँगा! क्या मैं गाता ही गाता खो जाऊँगा! उत्तर नहीं मिलता। प्रतिध्वनि गूँज कर रह जाती है।

गूँज में दुःख का प्रकाश और सुख की जलन है, अनुभूतियों की कलात्मक अभिव्यक्ति है, स्वभाव की स्पन्दित दीपशिखा है और जीवन की नित्य निदर्शना।

मनोविज्ञान और जीवन की वैज्ञानिकता से जो सत्य मुझे मिला वह "प्रतिध्वनि" में संगृहीत है। संग्रह के एक सौ एक गीत गत दो वर्षों में पैदा हुए हैं। ये जिस क्रम से उदय हुए हैं उसी क्रम से अंकबद्ध हैं। इन स्वरों में शिशुओं का सत्य है और बुढ़ापे का गाम्भीर्य। अतः क्या मैं आशा नहीं करूँ कि आप इन्हें शैशव की सुन्दरता एवं बुढ़ापे की शुभ्र गम्भीरता से नहीं अपनायेंगे।

मेरी आराधना का अर्घ्य सोने के कलश में नहीं है, श्रद्धा की अञ्जलियों में है। अकिंचन की आराधना असफल न होने पाये। तुम रीझो, यह मेरी कामना है। तुम मुझे अपना कहो, यह मेरी सिद्धि है। तुम्हें यदि शान्ति मिली तो मै सुख मानूँगा।

मेरी आराधना तभी सफल होगी जब शिवम् सौन्दर्य की बौछारें पृथ्वी के चरण पखारती रहेंगी। मुझे सच्ची शान्ति तभी मिलेगी जब मेरे गीतों पर मानवीय सौन्दर्य का पुरस्कार मुझे मिलेगा। मेरे इस विश्वास पर आँच आयी तो आपके सौन्दर्य पर आँच आयेगी।

अत. शुभ भावना से भारती की पूजा का यह प्रसाद सानन्द स्वीकार करें।

विजयदशमी
२००८

क्रम

गीत		पृष्ठ

गीत		पृष्ठ

गीत		पृष्ठ

गीत		पृष्ठ

प्रतिध्वनि

१

वह न निकलता है आँखों से, आँसू निकल रहे हैं ।
नयनों की निधि पर नयनों के, मोती पिघल रहे हैं ॥

झिलमिल करता रूप दृगों में,
पलक न पल को झुकती ।
हृदय-दीप जल रहा सिन्धु मे,
झलक न चल की रुकती ॥

कौन दृगों में मृग सा मोहक,
जो न पकड़ में आता ।
मैं गाता, वह नाचा करता,
दूर मुझे ले जाता ॥

वह न पिघलता है विद्युत से, जलधर पिघल रहे हैं ।
वह न निकलता है आँखों से, आँसू निकल रहे हैं ॥

सो मेरी आँखों के चचल ।
मेरी आँखों मे सो ।
सो मेरे मन की चंचलता ।
प्रिय की पॉखों मे सो ॥

जिन चचल पॉखों पर उड़ मै,
गा गा गीत रिझाऊँ ।
प्रिय भूला, मैं अपने प्रिय को,
दृग के दीप दिखाऊँ ॥

परिचित भी हो गया अपरिचित, अपलक नयन बहे हैं ।
वह न निकलता है आँखों से, आँसू निकल रहे हैं ॥

२
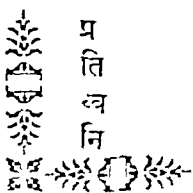
स्नेह भरा दीपक जलता है, दाह भरी उजियाली।
जीवन के इस चौराहे पर, रात घिरी है काली ॥

शलभों ने सीखा दीपक से,
दीपक पर जलना ही।
सन्ध्या ने देखा है प्रतिदिन,
सूरज का ढलना ही ॥

फूलों से पूछो माली का—
प्यार मिला है कितना।
दीपक की लौ! बता ज्योति का—
भार मिला है कितना ॥

जल कर बुझती तिमिर-अंक में, दीप पड़ा है खाली।
स्नेह भरा दीपक जलता है, दाह भरी उजियाली ॥
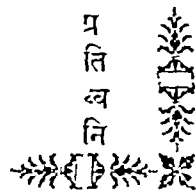
सागर में जीवन है लेकिन,
उसमें भी है ज्वाला ।
दीपक के अन्तर की पीड़ा,
समझे जिसे उजाला ॥

बिजली की तड़पन से निकली,
सावन की हरियाली ।
मिट्टी के मानस से फूटी,
सोने की उजियाली ॥

किन्तु प्यास बुझने से पहिले, टूटी मेरी प्याली ।
स्नेह भरा दीपक जलता है, दाह भरी उजियाली ॥

३
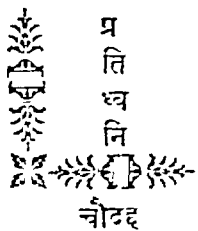
सावन मे पतझड इस तरु पर, यह कैसी अनहोनी !
छाया छोड़ गई क्यों इसको ! कहाँ गई मृगछोनी ?

किस छाया की स्मृति अम्बर में,
बन कर छाई बदली ।
आँखों की बरसात बन गई,
प्रिय की प्यासी पगली ॥

धधक न जाना कहीं काठ तुम !
उर में आग भरी है ।
तुम विहाग हो शून्य प्रकृति के,
कविता प्रिया परी है ॥

मुझसे सीखो इसी शून्य में, तुम भी कविता बोनी ।
सावन मे पतझड़ इस तरु पर, यह कैसी अनहोनी !

किस की याद लिये जंगल मे,
सूखा पेड़ खड़ा है ।
क्यों धरती ने इस प्यासे के,
पैरों को पकड़ा है ॥

सूख गई हरियाली इसकी,
उर मे पीर भरी है ।
या मेरी ही तरह दुखी यह,
इसकी प्रिया मरी है ॥

मेरे साथी ! यहाँ प्यार की, निधि पड़ती है खोनी ।
सावन में पतझड़ इस तरु पर, यह कैसी अनहोनी ।

४

चिता जलती है, किसी के श्वास जलते हैं।
खोजने किसको कहाँ, पग प्राण चलते हैं॥

जब कभी मुस्कान पल को,
भाव में देखी।
खोल कर मुट्ठी कभी जब,
चाव मे देखी॥

राख हँस कर उड़ गई, जल,
बुझ रही बत्ती।
दीप को दे स्नेह जल, ढल,
बुझ रही बत्ती॥

चाँद छू कर छिप गया, तारे मचलते हैं।
चिता जलती है, किसी के श्वास जलते हैं॥

५
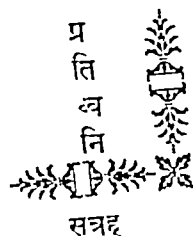
निकट मैं जितना हुआ उतनी बढ़ी दूरी ।
साध रोती है अधूरी साधना पूरी ॥

ओस की वर्षा चुगी,
पथ के चुगे पत्थर ।
चाँद छूने को उड़ा,
चढ़ प्यार के पर पर ॥

हाय ! चन्दा छिप गया,
जब चाँद तक पहुँचा ।
प्यास बदली बन गई,
तब चाँद तक पहुँचा ॥

प्राण पत्थर बन गये, आराधना पूरी ।
निकट मैं जितना हुआ उतनी बढ़ी दूरी ॥

६

बुझ गया बरसात बन, तारा गगन दृग का ।
बिंध गया डग तीर से, प्यासे मधुर मृग का ॥

दृगों की बरसात में,
खग उड़ रहा बेपर ।
रुदन की मुस्कान में,
तरणी चली जर्जर ॥

शून्य के विस्तार में,
आधार रोता है ।
आँसुओं की राह में—
मृदु प्यार रोता है ॥

गिर पड़ा तरु नीड़ मिट्टी में मिला खग का ।
बुझ गया बरसात बन, तारा गगन दृग का ॥

७

क्षितिज के उस पार, कोई दीप जलता है।
क्षितिज के इस पार, ढलता रूप चलता है॥

बन गया वह स्वप्न,
जो साकार उत्पल था।
छिप गया वह प्राण,
जो आकार था, छल था॥

कौन है! क्या है! न-
यह कुछ भेद मिल पाता।
किन्तु कुछ है जो कि,
स्वर में गूंज बन जाता॥

ज्योति यह किसकी कि, जिससे दिन निकलता है।
क्षितिज के उस पार, कोई दीप जलता है॥

८

तोड़ लिया वह फूल डाल पर जो मुस्काता था।
सूख गई वह सरिता जिसके तट पर गाता था॥

चिता नहीं बुझती रोने से,
दृग से जल चलता।
आँसू तो ढलते हैं लेकिन,
प्यार नहीं ढलता॥

फूल डाल पर भूल भूल कर,
क्यों मुस्काता है!
तोड़ तुझे पत्थर पर निर्मम,
प्यार चढ़ाता है॥

टूट गई वह प्रतिमा जिस पर फूल चढ़ाता था।
तोड़ लिया वह फूल डाल पर जो मुस्काता था॥

९

इधर चिता का धुवाँ, उधर है, फूलों की अठखेली ।
इधर शून्य के नयनों में जल, उधर प्रकृति अलबेली ॥

भंगुरता की स्वर्ण परिधि में,
वह विस्तार अपरिमित ।
जीवन तो सीमित होता है,
प्यार नहीं है सीमित ॥

क्यों विद्युत की आग गगन को,
अब तक जला न पाई ।
चलता चलता हार गया जग,
मंजिल हाथ न आई ॥

रजनी देख न पाई दिन को, दुनिया चली अकेली ।
इधर चिता का धुवाँ, उधर है, फूलों की अठखेली ॥

जाने कितनी विस्मृतियों की, स्मृति अंकित मानस में।
जाने कितनी घुलीं व्यथायें, सावन के पावस में॥

शून्य गगन में प्यासी बिजली,
तड़प तड़प रह जाती।
अपने मन की बात दामिनी,
मेघों से कह जाती॥

मेघ बरस पड़ते धरती पर,
धरती आँसू पीती।
राही! तुझको चलना ही है,
रीति यहाँ की रीती॥

दीप दिवाली के जलते हैं, तिमिरावृत मावस में।
जाने कितनी विस्मृतियों की, स्मृति अङ्कित मानस में॥

११

जागृति स्वप्नभंग की भंगुर, अभिलाषा ही तो है।
नियति निराशा की निर्झरणी, गत आशा ही तो है॥

जाने कितने फूल डाल पर,
खिल खिल कर गिर जाते।
जाने कितने स्वप्न टूट कर,
बीती याद दिलाते॥

जाने मिट्टी मे किस किस की,
सोई पड़ी कहानी।
जाने जीवन में किस किस की,
अर्थी पड़ी उठानी॥

जीवन आशाओं की कल्पित, परिभाषा ही तो है।
जागृति स्वप्नभंग की भंगुर, अभिलाषा ही तो है॥

जाने कितने तारे टूटे,
कितने पतझड़ आये ।
जाने कितनी बार गगन ने,
रो रो दीप जलाये ॥

जाने कितने फूल धूलि वन,
पैरों में रुँदते हैं ॥
सूरज नित जलता ढलता है,
नीरज नित मुँदते हैं ॥

आशा की मुस्कान तड़प की, यह भाषा ही तो है ।
जाग्रति स्वप्नभंग की भंगुर, अभिलाषा ही तो है ॥

१२
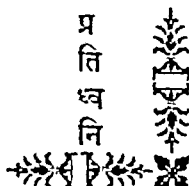
गति इति की स्वप्निल संसृति में, चाह न जाने क्या है !
जीवन और मरण में जन की, राह न जाने क्या है !

अन्तर्दाह लिये जीवन को,
सागर चला रहा है।
समय-स्रुवा इतिहास-यज्ञ में,
क्या क्या जला रहा है ॥

किसे पता है सुबह शाम के,
कितने आवर्त्तन हैं।
किसे पता है दुःख और सुख—
के कितने बन्धन हैं ॥

जीवन की जाज्वल्य ज्योति मे, दाह न जाने क्या है।
गति इति की स्वप्निल संसृति में, चाह न जाने क्या है।

चित्रित सी कल्पना-कुमुदिनी,
किसकी अठखेली है ।
भंगुरता की मूर्त्ति मनोहर,
कितनी अलबेली है ॥

क्या जग का परिचय मरघट की,
चिता किनारे तक ही ।
क्या इस रंगमंच का अभिनय,
गिरते तारे तक ही ।

आहुति के इस अग्निकुण्ड में, आह न जाने क्या है ।
गति इति की स्वप्निल संसृति मे, चाह न जाने क्या है ।

१३

तुम समझते हो कि मैं जिन्दा अभी चल भी रहा हूँ।
चल रहा हूँ, जल रहा हूँ, दृगों से ढल भी रहा हूँ॥

मृत्यु मेरी नाव है जो,
चल रही है नयन जल मे।
मैं किसी को ढूँढता हूँ,
शून्य के सुन्दर महल में॥

याद रो कर कह रही है,
जिन्दगी कविता मरण की।
हाथ में आँसू उठाये,
चाह जब मचली शरण की॥

जिन्दगी हारा हुआ हूँ, पगों मे पल भी रहा हूँ।
तुम समझते हो कि मै जिन्दा अभी चल भी रहा हूँ॥

१४

लक्ष्य नहीं मिलता है मुझको, राह नहीं बाकी ।
टूटा मेरा हृदय, हृदय में चाह नहीं बाकी ॥

यहाँ कहाँ है प्यार ! यहाँ तो–
आँसू रोते हैं ।
यहाँ कहाँ इंसान ! यहाँ तो–
पत्थर होते हैं ॥

जलती हुई चिता कहती है–
यहाँ कौन किसका ।
मरना है पर कब मरना है,
पता नहीं इसका ॥

श्वास श्वास में रोता हूँ पर, आह नहीं बाकी ।
लक्ष्य नहीं मिलता है मुझको, राह नहीं बाकी ॥

विस्तृत नभ के नीचे जग मे,
पक्षी आज अकेला उड़ता ।

उड़ता है श्वासों का पक्षी,
मुड़ता है श्वासों का पक्षी,
घिरता है श्वासों का पक्षी,
गिरता है श्वासों का पक्षी,

गिरता पड़ता फिर उड़ता है,
पक्षी नहीं लक्ष्य से मुड़ता ।
विस्तृत नभ के नीचे जग में,
पक्षी आज अकेला उड़ता ॥

उड़ता उधर जिधर कुछ खोया,
आँसू अम्बर में जा बोया,
जग में एक एक को रोया,
रोया, रो कर खुद को खोया,

लेकिन मिला न वह प्रिय जिससे,
मृत्यु हारती, जीवन जुड़ता ।
विस्तृत नभ के नीचे जग मे,
पक्षी आज अकेला उड़ता ॥

सत्य भी तो स्वप्न बनता, स्वप्न को फिर क्या कहूँ मैं ।

मैं बनाता जा रहा हूँ,
वह मिटाता जा रहा है ।
मैं मिलन के गीत गाता,
वह विरह के गा रहा है ॥

चित्र रच रच कर मिटाता,
स्वप्न आँखों का अनोखा ।
सत्य समझा था जिसे मैं,
आज वह विश्वास धोखा ॥

तुम कहो स्वप्निल जगत में, सत्य कह कब तक रहूँ मैं ।
सत्य भी तो स्वप्न बनता, स्वप्न को फिर क्या कहूँ मैं ॥

मैं जवानी की सुरभि को,
कल कहानी देखता हूँ ।
सिन्धु की उठती लहर को,
आग पानी देखता हूँ ॥

धूम्र रेखा पर मुझे है,
स्वर्ग पाने की प्रतीक्षा ।
पास होने पर मुझे है,
दूर जाने की प्रतीक्षा ॥

स्वप्न पर विश्वास करके, नीर बन कब तक बहूँ मैं ।
सत्य भी तो स्वप्न बनता, स्वप्न को फिर क्या कहूँ मैं ॥

१७
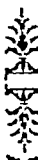
जीत गई तुम, हार गया मै ।

जीती हुई जीत ली बाजी,
यह कैसे किस धार गया मै ।

तुम तो तैर गई सागर को,
लेकिन मैं मँझधार रह गया ।
तुम तो पार हो गई जग से,
लेकिन मैं इस पार रह गया ॥

तुमने मुझे रूप से जीता,
तुमने मुझे अन्त से जीता ।
तुमने दीपक भरा स्नेह से,
लेकिन जलता दीपक रीता ॥

जीत गया मैं इस दुनिया से,
किन्तु मौत से हार गया मै ।
जीती हुई जीत ली बाजी,
यह कैसे किस धार गया मै ॥

जीत गई तुम, हार गया मै ।

मेरी मौत, तुम्हारी पीड़ा, प्राण ! पीर, उपहास बन गई
हँसी रुदन मे बदली, दुनिया बदली, आशा निराश बन गई

चन्दा हँसता तुम्हें देख कर,
रजनी हँसती, तारे हँसते ।
फूल बगीचों मे हँसते हैं,
आँखो मे अङ्गारे हँसते ॥

तुम्हें देख कर धरती हँसती,
तुम्हे स्वयम् पर हँसी आ रही ।
हँसते हो फिर रो देते हो,
हँसती रोती पीर गा रही ॥

आँसू पी पी कर भी प्यासी, विधि की कैसी प्यास बन गई
मेरी मौत, तुम्हारी पीड़ा, प्राण ! पीर, उपहास बन गई ।

अरे चाँद चमकीले ! प्रिय के,
आँसू का उपहास न कर तू ।
दिन के दीप ! रात के राजा !
पीडा की ज्वाला से डर तू ॥

माली की सौगन्ध फूल तू,
प्रिय को देख न खिल मुस्काना ।
झूम झूम कर महक महक कर,
उन्हे न मेरी याद दिलाना ॥

दूर गई मै जितनी प्रिय से, पीड़ा उतनी पास बन गई ।
मेरी मौत, तुम्हारी पीड़ा, प्राण ! पीर, उपहास बन गई ।

जीवन की जलती बटिया पर,
दुनिया मे चलना पड़ता है।
अरे आयु की पगडण्डी पर,
रिस रिस कर गलना पड़ता है ॥

दुनिया बनी हुई उस मधु की,
जो छूने से उड़ जाता है।
श्वास-शलभ जलते दीपक पर,
दीपक कौन, कहाँ गाता है!

चिन्ता चिता बनी जीवन की,
आँसू धरती में गड़ता है।
यहाँ जिन्दगी को जीवन भर,
दुनिया से लड़ना पड़ता है ॥

अपने ही हाथों से अपनी,
दुनिया को छलना पड़ता है।
जीवन की जलती बटिया पर,
दुनिया मे चलना पड़ता है ॥

२०

हरी डाल पर हवा झुलाती,
फूल व्यर्थ मुस्काता।
क्षणभंगुर दुनिया मे किसका-
किस से क्या है नाता॥

स्वप्नों का संसार अरे यह,
ढलती फिरती छाया।
मिट्टी बन पैरों में रुँदती,
सोने जैसी काया॥

चलना तो पड़ता ही है पर,
पग पग पर है छलना।
जग की चमकीली फिसलन पर,
सँभल सँभल कर चलना॥

फूल खिला करता दुनिया में,
धूल यहीं बन जाता।
क्षणभंगुर दुनिया में किसका,
किस से क्या है नाता॥

किसे पता है इस जीवन मे,
किस क्षण किस पर पर्वत टूटे।
किसे पता है वज्रपात से,
किस क्षण किसकी किस्मत फूटे॥

राजतिलक होने वाला था,
किन्तु फकीरी मिली राम को।
हम समझे बरात आई है,
दूल्हा जग से चला शाम को॥

हमने कहा जीत कर आये,
कहा नियति ने हार आज है।
ध्वनि गूँजी तट आया, गाओ,
किन्तु मौन झनकार आज है॥

किसे पता है इस जीवन मे,
किस पल किस का साथी छूटे।
किसे पता है इस जीवन में,
किस क्षण किसकी किस्मत फूटे॥

तट बन कर मँझधार बन गई,
नीर बनी आँखों में आकर।
चली गई तुम लेकिन बोलो,
मुझको छोड़ गई हो किस पर॥

ओस पकड़ कर तारे पकड़े,
पर वे टूट गिरे पलकों से।
कभी कभी ओले भी गिरते,
अम्बर की श्यामल अलकों से॥

मरघट के फूलों की माला,
प्यासी पीड़ा हार पिरोती।
एक बार आँचल फैला दो,
भरदूँ मैं आँखों के मोती॥

जीने को तो जीता हूँ पर,
जीवन अब मरने से बदतर।
तट बन कर मँझधार बन गई,
नीर बनीं आँखों में आकर॥
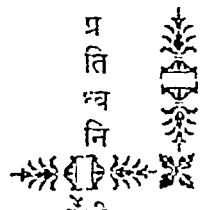
सब कुछ खोकर तुमको पाया,
यह भी देख न पाया ईश्वर ।
जाने कब तक जीऊँगा मैं,
अपनी छाती पर पत्थर धर ॥

तुम मेरी मुस्कान बनी थीं,
पल भर को अधरों पर आकर ।
भूल गया था मैं दुःखों को,
केवल प्यार तुम्हारा पाकर ॥

मेरी छाती पर पत्थर है,
बरस रहे ऊपर से पत्थर ।
तट बन कर मँझधार बन गई,
नीर बनी आँखों में आकर ॥

२३

तुम प्रतिमा, मैं पूजा हूँ अब।

प्राण तड़प कर रह जाते हैं,
याद तुम्हें करता हूँ जब जब।

प्रतिमे! पूजा के प्रसाद में,
मन की अमर ज्योति पहिचानूँ।
तुमने देकर छीन लिया जो,
उसे तुम्हारे ही में जानूँ॥

श्रद्धा दया समष्टि सृष्टि में,
स्वर्गगते! तुम दर्शन देना।
मेरे पास चार आँसू हैं,
प्राणप्रिये! उनको ले लेना॥

अब वे जब जब मुझे सताते,
देवी! रो पड़ता हूँ तब तब।
तुम प्रतिमा, मैं पूजा हूँ अब॥

मानव ने अपने हाथों से,
अपना भाग्य बिगाड़ लिया।
और कहा होनी ने मेरा–
सुन्दर स्वर्ग उजाड़ दिया॥

मानव भूला मार्ग, जान कर,
होनी इसीलिये जीती।
हाथ मार कर अमृत बिखेरा,
प्याली इसीलिये रीती॥

भूल हमारी हुई तनिक सी,
होनी होकर रही बड़ी।
लड़ी टूट जाती जीवन की,
जीवन होता कड़ी कड़ी॥

मेला अच्छा लगा न जब, तब–
डेरा स्वयम् उखाड दिया।
मानव ने अपने हाथो से,
अपना भाग्य बिगाड़ लिया।

२५

मेरा स्वर्ग उजाड़ गये तुम,
स्वर्गलोक के सुन्दर तारे।
अब तुम लौट नहीं आओगे,
मैं आऊँगा पास तुम्हारे॥

आना अभी चाहता हूँ पर—
बन्द आयु की कारा मे हूँ।
ओर छोर का पता नहीं कुछ,
मैं तेरी उस धारा में हूँ॥

समा सिन्धु के जल में जीवन,
तोड़ आयु के जकड़े बन्धन।
एक दिवस तेरे चरणों में—
देव। चढ़ा ही दूँगा चन्दन॥

तेरे बिना जिन्दगी फीकी,
जग के बन्द द्वार हैं सारे।
मेरा स्वर्ग उजाड़ गये तुम,
स्वर्गलोक के सुन्दर तारे।

मुझे छोड़ कर ही जाना था,
तो तुम राह बता कर जाते।
अगर अँधेरा ही करना था,
तो न सुनहरी दीप जलाते॥

मुरझा कर गिर पड़ी कुमुदनी,
अब चन्दा भी गिर जायेगा।
जिसे उजाला समझे उस पर—
घोर अँधेरा घिर जायेगा॥

अन्धकार में मिल कर तब मैं,
छू ही लूँगा चरण तुम्हारे।
मेरा स्वर्ग उजाड़ गये तुम,
स्वर्गलोक के सुन्दर तारे।

२६

मेरी बीती हुई कहानी–
मत छेड़ो तुम थक जाओगे।
तड़प रहा मैं जितना खुद ही,
क्या उतना तड़पा पाओगे!

मेरे प्राण बन गये आँसू,
मनचाही हो गई तुम्हारी।
लो अब जी भर खूब हँसो तुम,
वह तो सह सह स्वर्ग सिधारी॥

मेरी तड़पन पर तुम अपने,
तीर व्यर्थ ही तोड़ रहे हो।
मुझे सताने को क्यों जुड़ जुड़,
लम्बी बाते जोड़ रहे हो॥

मेरे गीत नहीं मरने के,
तुम तो कल ही मर जाओगे।
मेरी बीती हुई कहानी–
मत छेड़ो तुम थक जाओगे॥

मेरी कथा बहुत लम्बी है,
लिख न सकेगी आयु तुम्हारी।
मेरी व्यथा बहुत मीठी है,
सरस करेगी रसना खारी॥

छेड़ छेड़ तुम थक जाते हो,
मैं रोता रोता कब थकता।
तुम चुगते चुगते थक जाते,
मैं बोता बोता कब थकता॥

मैं तो प्रतिपल ही गाता हूँ,
तुम तो पल दो पल गाओगे।
मेरी बीती हुई कहानी—
मत छेड़ो तुम थक जाओगे।

नयन झरते थे सदा बरसात होती थी।
आँसुओं से वह हृदय की आग धोती थी॥

बहुत रोती थी मगर दुनिया नहीं बदली।
आग सूखी ही नहीं बदली बनी पगली॥
नाव तेरी इसलिये जग तीर पर पहुँचे।
पार उस मँझधार के वह तैर कर पहुँचे॥

किन्तु जल मे भी जगत की आग सोती थी।
नयन झरते थे सदा बरसात होती थी॥

आँसुओं में पीर थी तकदीर थी फूटी।
चाँदनी आई कि उसकी जिन्दगी छूटी॥
तीर पर डूबी किसी के भाग्य की तरणी।
नीर भर डूबी किसी के काव्य की तरणी॥

नयन रोते थे सदा बरसात सोती थी।
नयन झरते थे सदा बरसात होती थी॥

मेरी कथा बहुत लम्बी है,
लिख न सकेगी आयु तुम्हारी।
मेरी व्यथा बहुत मीठी है,
सरस करेगी रसना खारी॥

छेड़ छेड़ तुम थक जाते हो,
मै रोता रोता कब थकता।
तुम चुगते चुगते थक जाते,
मैं बोता बोता कब थकता॥

मैं तो प्रतिपल ही गाता हूँ,
तुम तो पल दो पल गाओगे।
मेरी बीती हुई कहानी–
मत छेड़ो तुम थक जाओगे।

२७

नयन झरते थे सदा बरसात होती थी।
आँसुओं से वह हृदय की आग धोती थी॥

बहुत रोती थी मगर दुनिया नहीं बदली।
आग सूखी ही नहीं बदली बनी पगली॥
नाव तैरी इसलिये जग तीर पर पहुँचे।
पार उस मँझधार के वह तैर कर पहुँचे॥

किन्तु जल में भी जगत की आग सोती थी।
नयन झरते थे सदा बरसात होती थी॥

आँसुओं में पीर थी तकदीर थी फूटी।
चाँदनी आई कि उसकी जिन्दगी छूटी॥
तीर पर डूबी किसी के भाग्य की तरणी।
नीर भर डूबी किसी के काव्य की तरणी॥

नयन रोते थे सदा बरसात सोती थी।
नयन झरते थे सदा बरसात होती थी॥

२८

चन्दा ! आज हँसो तुम मुझ पर, तारो ! मुझ पर टूटो ।
दोनों आँखें लुटा रही हैं, आओ मोती लूटो ॥

मैं रोऊँ, तुम हँसो यही तो—
जग ने मुझे सिखाया ।
मेरी पीड़ा ने आँसू का,
मुझ को दीप दिखाया ॥

धरती पर हरियाली होती,
मेघों के रोने से ।
मुस्काता है फूल धरा पर,
दो आँसू बोने से ॥

आँसू में उर घुला हुआ है, मानस का मधु लूटो ।
चन्दा ! आज हँसो तुम मुझ पर, तारो ! मुझ पर टूटो ॥

मुझे देख कोयल हँसती है,
हँसती हैं बरसाते ।
मेरी हँसी उड़ाया करतीं,
रजत-चाँदनी रातें ॥

मुझे देख कर हँस देता है—
प्रिय प्रेयसि का जोड़ा ।
मुझे देख मेरे शीशे ने—
मेरा ही मुँह मोड़ा ॥

मैं तो फूट पड़ा पीड़ा से, तुम सुख पाकर फूटो ।
चन्दा ! आज हँसो तुम मुझ पर, तारो ! मुझ पर टूटो ॥

२९
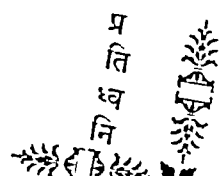
मत याद दिलाओ, मुझे नियति से अभी बहुत लड़ना है।
मत चोट दुखाओ, मुझे चोट को दुबका कर बढना है॥

जीवन की इस पगडण्डी पर,
ऊँचे नीचे टीले।
पग पग पर मुस्कान ढूँढते,
नयन युगों से गीले॥

किन्तु नियति प्रतिध्वनि में कहती–
जी जग में रोने को।
पाने को मत कदम बढा तू,
बढता चल खोने को॥

पर नियति नियम के आगे झुकना थक कर गिर पड़ना है।
मत याद दिलाओ, मुझे नियति से अभी बहुत लड़ना है॥

बार बार इस क्रूर नियति ने—
चौराहे पर लूटा।
बार बार मेरे हाथों से—
मेरा ही घट फूटा॥

एक बार बस और, चाह यह—
मरी नहीं है मेरी।
मेरा चाँद टटोल रही है—
मेरी रात अँधेरी॥

पर मुझे नीर का तार पकड़ कर तारों तक चढ़ना है।
मत याद दिलाओ, मुझे नियति से अभी बहुत लड़ना है॥
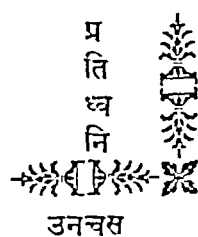
मैं तट पर खड़ा था, मँझधार आया ।
वह मुझ मे मिला, मै उसमे समाया ॥

कि मँझधार का मैं किनारा बना था ।
जीवन का जीवन सहारा बना था ॥
उठीं वीचियाँ और तूफान आये ।
हिली जिन्दगी चार आँसू चुराये ॥

कि आँखो का जीवन सागर बनाया ।
मैं तट पर खड़ा था, मँझधार आया ॥

रहीं तोड़तीं कूल लहरें बिचारी ।
लहरों से उठती जवानी न हारी ॥
लहरों में घुल घुल किनारा न खोया ।
लहरों के आगे किनारा न खोया ॥

तट ने तरगों को बन्दी बनाया ।
मैं तट पर खड़ा था, मँझधार आया ॥

३१

सवेरे का सूरज ढला शाम आई।
दुनिया ने दीपक की बत्ती जलाई॥
लो दीपक जले और लौ पर जला मै।
नयन जल से दीपक जलाता चला मैं॥

कि बनाया किसी ने किसी ने बिगाड़ा।
किनारे का पौधा लहर ने उजाड़ा॥
जवानी का सागर उठा चाँद लखकर।
कि खिली चाँदनी रात की कालिमा पर॥

मुझे तुमने मिलकर दिया रूप का रस।
दिया तुमने जीवन तड़प के लिये बस॥
जलाया था दीपक बुझा भी दिया ही।
पिलाया था पावस अमृत भी पिया ही॥

३२

जहाँ नीड था आज टीला पडा है ।
कि जगल मे कोई खाली खड़ा है ॥

किसी ने जला स्नेह,
दीपक जलाये ।
किसी ने जले देख,
दीपक बुझाये ।

किसी के लिये रात,
रोती रही है ।
रुदन मे भी दुनिया,
सोती रही है ॥

कि चट्टान पर एक पागल खड़ा है ।
जहाँ नीड़ था आज टीला पड़ा है ॥

३३

भुजाओं मे लहरों को तट ने नचाया।
किनारे ने लहरों को बन्दी बनाया॥

कि बड़ी प्यास है दो-
किनारों मे देखो।
कि बड़ी चाह है दो-
सितारों में देखो॥

कि बहुत पास हैं ये,
मगर कितनी दूरी।
क्या कोई कहेगा,
यह पूजा अधूरी॥

हा, लहरों से योगी वियोगी कहाया।
भुजाओं में लहरों को तट ने नचाया॥
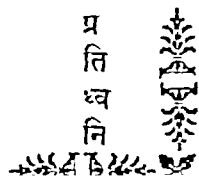
न जाने किसे ढूँढती हैं ये आँखे ।
कहाँ हैं जिसे ढूँढती हैं ये आँखे ॥

मैं दो चार आँसू लिये फिर रहा हूँ ।
मैं फूलों में काँटों से घिर रहा हूँ ॥
न जाने कहाँ खो गया है क्या मेरा ?
उजाले मे मै ढूँढता हूँ अँधेरा ॥

कि जीवन अखरता कटी मेरी पाँखें ।
न जाने किसे ढूँढती हैं ये आँखे ॥

३५

न मैं मुक्ति के मोतियों को चुगूँगा ।
न मैं योग की युक्तियों को बुनूँगा ॥

चुना था जिसे मै उसी को चुनूँगा ।
आँखों के आँसू कलम से चुगूँगा ॥
कि बीती कहानी नयी कर रहा हूँ ।
चिता फूँक कर राख को धर रहा हूँ ॥

न मैं जब रुका था न मैं अब रुकूँगा ।
न मै मुक्ति के मोतियों को चुगूँगा ॥

वही नाव मेरी, लहर भी वही है ।
बुझी दीपिका जीत भी तो रही है ॥
निशा घिर रही दीप मै जल रहा हूँ ।
कि जीवन को रो रो कर छल रहा हूँ ॥

उसे ढूँढने को पगों में झुकूँगा ।
न मैं मुक्ति के मोतियों को चुगूँगा ॥
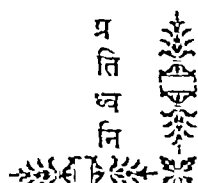
कि जीवन से ऊबा हुआ जी रहा हूँ।

हुई जिन्दगी चीथड़ा, फटते फटते।
बनीं धज्जियाँ प्यार की, कटते कटते॥
कहीं भी नहीं अब रहा, हटते हटते।
वही बन गया मैं उसे, रटते रटते॥

कि गीतों से अपना हृदय सी रहा हूँ।
कि जीवन से ऊबा हुआ जी रहा हूँ॥

न मन में जवानी न दुनिया मे रस है।
सहारा रहा एक आँसू ही बस है॥
कि गिरा टूट कर फूल सा वह सितारा।
लो आई प्रलय और डूबा किनारा॥

कि आँसू मे अपना हृदय पी रहा हूँ।
कि जीवन से ऊबा हुआ जी रहा हूँ॥

कहाँ से आता है यह जीव, कहाँ को उड़ जाता है हंस।
प्रश्न यह हल होता ही नहीं, जीव है किस ईश्वर का अंश॥

न जाने किसकी मायामयी—
सृष्टि में दृष्टि देखती रंग।
न जाने कहाँ डोर की छोर,
उड़ रहा यह जीवन का चंग॥

जिन्दगी एक खिलौनामात्र,
किन्तु इस पर भी होते जंग।
खून के लिये तड़पते प्राण,
प्राण पर प्राण खींचते खंग॥

बोल कुछ धूलि! बोल कुछ गगन! कहाँ है वह जिसका यह वंश।
कहाँ से आता है यह जीव, कहाँ को उड़ जाता है हंस॥
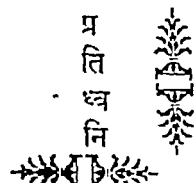
बने आँखों के आँसू आज,
बिगड़ कर जीवन के सब ढंग।
प्यार के चिह्न धूलि बन गये,
धूलि मे ढूँढ रहा प्रिय अग ॥

आज जागी जिज्ञासा नयी,
स्वप्न सारे कर बैठा भग।
कौन कानों में कहता रोज-
एक है जल वह तरल तरग ॥

जवानी बचपन को खा गई, बुढापा ढूँढ रहा अवतंस।
कहाँ से आता है यह जीव, कहाँ को उड़ जाता है हस ॥

३८

आज किसी के अरमानों की अर्थी जाती है ।
आज विधाता की निर्ममता अश्रु उठाती है ॥

जिसको आँचल की छाया में प्यार किया मैंने ।
जिसकी गोदी मे अपना ससार दिया मैंने ॥
जिसे देख मेरी छाया में यह जग जलता था ।
जिसके पथ में दीपक लेकर राही चलता था ॥

आज उसी दीपक की वत्ती राख उड़ाती है ।
आज किसी के अरमानों की अर्थी जाती है ॥

जिसे सींच आँखो के जल से फूल बनाया था ।
अपने जीवन की डाली पर फूल खिलाया था ॥
फूल हँसा, माली ने आकर तोड़ लिया उसको ।
पत्थर ने पत्थर के ऊपर चढा दिया उसको ॥

लेकिन पत्थर को भी प्रतिमा कला बनाती है ।
आज किसी के अरमानों की अर्थी जाती है ॥

मरने पर भी लगी न जिसके माथे पर रोली।
आज चार कन्धो पर जाती यह उसकी डोली॥
कन्धो पर चढ कर जाती है प्रियतम की प्यारी।
कहीं नही हारी दुनिया पर हाय! यहाँ हारी॥

आज विधाता की निर्ममता विरह बनाती है।
आज किसी के अरमानो की अर्थी जाती है॥

पता बताये बिना गई वह किस पथ से जाने।
अनजाने बन गये सदा को जाने पहिचाने॥
आज मुझे ईश्वर पर भी तो दया आ रही है।
दयासिन्धु के पास दया की भीख जा रही है॥

जो कुछ दीख रहा है वह सब किस की थाती है।
आज किसी के अरमानो की अर्थी जाती है॥

अलकों मे सिन्दूर लगा लूँ जाने वाली रुक।
गौने की साड़ी पहिना लूँ जाने वाली रुक।
आ रो रो कर तुझे मना लूँ जाने वाली रुक।
आ आँसू के फूल चढा लूँ जाने वाली रुक।

आ ठोकर से मुझे उठाले पीर बुलाती है।
आज किसी के अरमानों की अर्थी जाती है॥

लो मरघट आगया हो चुकी यात्रा ही पूरी ।
चलते चलते थके पैर पर थी इतनी दूरी ॥
छूट गये सब राग यहीं पर छूट गये नाते ।
जीवन और मरण का कुछ भी भेद नहीं पाते ॥

मरघट की मिट्टी में दुनिया चिता जलाती है
आज किसी के अरमानों की अर्थी जाती है

चिता जला कर राख बना कर उसको छोड़ चले ।
मरघट के सूने जंगल में मेरे प्राण जले ॥
रूप जवानी एक कहानी छोड़ चली अपनी ।
इन अधरों पर बात पुरानी छोड़ चली अपनी ॥

आँखों की वर्षा में दुनिया चिता जलाती है
आज किसी के अरमानों की अर्थी जाती है

चार दिनों का मेला पगले मरघट में होता ।
लिये चिता की राख हाथ में हर प्राणी रोता ॥
मरे हुओं की राख जिसे तुम धरती बतलाते ।
तेरा क्या है अरे कफन भी भूखे ले जाते ॥

धरा गोद है, अम्बर छाया, अर्थी गाती है
आज किसी के अरमानों की अर्थी जाती है

ये बलखाते बाल रेशमी पल में जल जाते।
आँसू बन कर सारे नाते उस दिन ढल जाते॥
कह देते हैं दुनिया वाले उसे भूल जाओ।
पागलपन की बात छोड़ दो दुनिया में आओ॥

दुनिया में जीवन की थाती राख उड़ाती है।
आज किसी के अरमानों की अर्थी जाती है॥

३९

धूप छाँह की इस दुनिया में—
मिलना और बिछड़ना क्रम है।
हार जीत के इस मेले में—
बसना और उजड़ना क्रम है॥

अभी धूप है, अभी छाँह है,
अभी रात है, अभी सवेरा।
अभी रोशनी थी उस घर में,
अभी अभी होगया अँधेरा॥

अधरों की मुस्कान निमिष में—
आँखों का जल बन जाती है।
सच पूछो तो सच सच कह दूँ—
दुनिया मरघट में गाती है॥

मृत्यु नाचती, नाच रहे हम,
मेरा तेरा झूठा भ्रम है।
धूप छाँह की इस दुनिया में—
मिलना और बिछड़ना क्रम है॥

नाव बनी तुम, तैर गई तुम,
राह ढूँढता मै तरने की।
तुम पहले मर गई और मै–
बाट देखता हूँ मरने की॥

यह सागर तूफानी जिसमे–
मुझको छोड़ गई लहरों पर।
मैं क्या करूँ बताओ तुम ही,
असर नही होता बहरों पर॥

कभी शून्य की ओर देख कर,
देवी। तुम्हें पुकारा करता।
कभी दिशाओं से थक थक कर,
अपनी धरा निहारा करता॥

पर न मिली कोई पगडण्डा–
जग में नूतन पग धरने की।
नाव बनीं तुम, तैर गई तुम,
राह ढूँढता मै तरने की॥

यदि मै तुम से पहले मरता, तो तुम कैसे सहती ये दुख।
दुनिया देख देख हँसती है, मेरा आँसू से भीगा मुख॥

बैठ अकेली उस कमरे मे–
जब तुम फूट फूट कर रोती।
जब उस पूजा की चौकी पर–
मेरा चित्र दृगों से धोती॥
जब आँखों के आगे आती–
मेरी चलती फिरती छाया।
जब दर्शन के पृष्ठ खोलती–
जलती हुई चिता मे काया॥

तब आँसू कैसे सह पाते साथ साथ रहने के दुख सुख।
यदि मै तुम से पहले मरता, तो तुम कैसे सहती ये दुख॥

मेरी अपनी और जगत की–
याद तुम्हें आतीं जब बातें।
ओस भरी प्यासी जलधर सी,
याद तुम्हें आती वे रातें॥
याद तुम्हें आते जब प्रतिपल,
इसकी झिड़की उसके ताने।
पल न काटने मे कटता जब,
रूखे लगते अपने गाने॥

तब कैसे उठते सुन्दर पग, तब कैसे उठता सुन्दर मुख।
यदि मै तुम से पहले मरता, तो तुम कैसे सहती ये दुख॥

प्रतिध्वनि
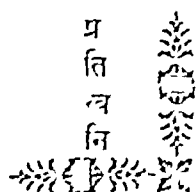
होली के दिन पुछी देखती,
दुनिया इस माथे की रोली।
और तीर सी चुभती उर मे,
बार बार दुनिया की बोली ॥
तब भीगे मोती बरसाती,
आँसू भरी फटी सी झोली।
होली के दिन जलती होती,
जब सब अरमानों की होली ॥

बन की निर्झरणी ! निर्जन मे तब तुम किससे कहती ये दुख।
यदि मैं तुमसे पहले मरता, तो तुम कैसे सहती ये दुख ॥

रोतीं रोतीं गातीं गातीं,
जब भूखी प्यासी पड़ जातीं।
जब अम्बर से होड़ लगा कर,
धरती मे आँखें गड़ जातीं ॥
ले सिन्दूरी राख हाथ में,
जब तुमको चलना ही पड़ता।
दुनिया के मनहर मेले में,
जब तुमको जलना ही पड़ता ॥

आँखों के आँसू बन जाते तब दुनिया भर के सारे सुख।
यदि मैं तुमसे पहले मरता, तो तुम कैसे सहती ये दुख ॥

याद किसी को करके रोते बात बात मे बादल ।
प्राणो में पीड़ा भर देते प्राण किसी के पागल ॥

पगले मेघो ! इस धरती पर मोती टूटा करते ।
पगले मेघो ! इस धरती पर साथी छूटा करते ॥
यहाँ न रोओ, यहाँ न बरसो, यहाँ न गाओ रिमझिम ।
बिजली के दीपक बुझ जाते, कौंध कौंध कर टिमटिम ॥

याद तुम्हें आती क्यों पल पल किसी प्रिया की पायल ।
याद किसी को करके रोते बात बात में बादल ॥

तुम तो धरती हरी बनाते, धरती तुमको पीती ।
जीवन की बत्ती जल जाती, अन्त दीपिका रीती ॥
इस रीती दुनिया में अपनी निधि क्यों व्यर्थ लुटाते ।
अर्थ निकलता नहीं यहाँ कुछ, अपना अर्थ लुटाते ॥

जग में मरहम नहीं घाव का, जग में होते घायल ।
याद किसी को करके रोते बात बात में बादल ॥
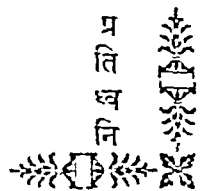
लो पतझड़ के बाद आगई पेड़ों पर हरियाली।
पर न धुली सावन भादो से कवि की कोयल काली॥

और हरे हो गये घाव वे,
जो नीरव रोते थे।
याद आ गये वे दिन जिनमें,
नयन चार होते थे॥

कहते हैं मिट्टी मे मिलकर,
दाना बनता मोती।
किन्तु खाक में मिलकर भी तो,
जीत न कवि की होती॥

फूलों से दो बोल प्यार के माँग रहा है माली।
लो पतझड़ के बाद आगई पेड़ों पर हरियाली॥

मुझको जीने दो मैं जैसे भी जीऊँ।
मुझको पीने दो मैं जैसे भी पीऊँ॥

मैं पाप पुण्य में उलझ गला हूँ अब तक।
मैं दृग-दीपों से बहुत जला हूँ अब तक॥
मेरे ढलने पर तरस न तुम को आया।
मेरे जलने पर तरस न तुम को आया॥

अब तुम्हें पड़ी क्या, मैं कैसे भी जीऊँ।
मुझको जीने दो मैं जैसे भी जीऊँ॥

मैं रात और दिन भूल बराबर गाता।
अपने गीतों के दीप उड़ाता जाता॥
मैं रुनझुन की झनकार हार बैठा हूँ।
मैं अपना सब संसार हार बैठा हूँ॥

अब तुम्हें पड़ी क्या, मैं कैसे भी पीऊँ।
मुझको जीने दो मैं जैसे भी जीऊँ॥

हम आये खाली हाथ चले।
सामान न अपने साथ चले॥

कुछ रोये कुछ हँस लिये यहाँ।
कुछ फीके प्याले पिये यहाँ॥
हम जलते भुनते जिये यहाँ।
रोने ही को हँस लिये यहाँ॥

हम अपने हाथों आप जले।
हम आये खाली हाथ चले॥

दिन आये उड़ कर निकल गये।
हम उड़ते उड़ते फिसल गये॥
पर मिला न वह जिससे कहते—
थक गये विरह सहते सहते॥

हम बहुत बुरे, तुम बहुत भले।
हम आये खाली हाथ चले॥

४६

ज्योति! तुझ मे ज्वाला भी है।
हृदय में अमृत सरोवर किन्तु वेदना का छाला भी है।
ज्योति! तुझ मे ज्वाला भी है।

कि स्नेह से जलती दीपशिखा,
दाह पर जलते परवाने।
राख होने की लेकर चाह,
आग पर चलते दीवाने॥

आँसुओं की मंजिल है प्यार,
रात भर जलते हैं तारे।
प्यार की परिभाषा है वही,
चुगे हैं जिसने अङ्गारे॥

हाथ में मेरे वीणा किन्तु, भिखारी का प्याला भी है।
ज्योति! तुझ में ज्वाला भी है।
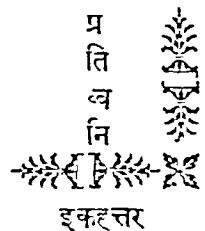
जिन्दगी काटे न कटती,
पीर यह बाँटे न बटती,

चाँद तारे हँस रहे कविता चिता मे जल रही है।

पीर जितनी अधिक जागी,
मृत्यु उतनी दूर भागी,

चाँदनी मे आज अर्थी जिन्दगी की चल रही है।

जिन्दगी का नाम दुख है,
दुःख ही तो सतत सुख है,

दुःख के गहरे उदधि मे आग सुख की जल रही है।

मौत से पहले नहीं विश्राम ।
अन्त से पहले नहीं आराम ॥

•

जन्म की मंजिल मरण की राह मरघट तक ।

श्वास घटने को मिले हैं हाय !
प्यार पर है काल का अन्याय ॥

जिन्दगी में तड़प है पर चाह मरघट तक ।
जन्म की मंजिल मरण की राह मरघट तक ॥

राह में पग रोकने को शूल ।
फूल के संकल्प बनते धूल ॥

दीप मे है स्नेह लेकिन दाह मरघट तक ।
जन्म की मंजिल मरण की राह मरघट तक ॥

चली जा रहीं तुम घिरी रात आती ।
अगर तुम न जाती दिवाली न जाती ॥

अगर तुम न आतीं जवानी न आती ।
अगर तुम न जाती जवानी न जाती ॥
जला रात भर दीप तेरे विरह मे ।
बनी जिन्दगी रात मेरे विरह मे ॥

जवानी बनी दीपिका जग जलाती ।
चली जा रहीं तुम, घिरी रात आती ॥

मुझे मृत्यु दे कर चली जा रही हो ।
शुभे ! प्राण लेकर चली जा रही हो ॥
सरल सारिके ! शान्ति बन कर मिलीं थी ।
मुझे प्यार के पार तट पर मिली थी ॥

कि अब नाव मेरी मुझी को डुबाती ।
चली जा रहीं तुम घिरी रात आती ॥

अश्रु बह रहे हैं और जल रही चिता,
किन्तु चाह है अभी भी आह मे मुझे।

जो बना गई है नीर पीर जिन्दगी।
जो चली किसी की चीर चीर जिन्दगी॥
छीन कर जिसे कि मुझसे मौत ले गई।
श्वास श्वास में मुझे जो मौत दे गई॥

मौत! जिन्दगी की आज जिन्दगी बता।
छोड़ कर गया है दीप राह मे मुझे॥
अश्रु बह रहे हैं और जल रही चिता।
किन्तु चाह है अभी भी आह में मुझे॥

राह मे उसी की रात बीत, दिन गया।
चाह में उसी की रात बीत, दिन गया॥
याद में उसी की रात बीत, दिन गया।
बात में उसी की रात बीत, दिन गया॥

मौत! यह बता दे जिन्दगी कहाँ गई।
मत्य छोड़ कर गया है दाह में मुझे॥
अश्रु बह रहे हैं और जल रही चिता।
किन्तु चाह है अभी भी आह में मुझे॥

चाँदनी खिली हुई है चाँद चल रहा।
कि या समाधि पर कहीं चिराग जल रहा॥
चाँद हँस रहा है और प्यार रो रहा।
आग ही से आग या कि चाँद धो रहा॥

जगमगा रही है आज प्रीति की चिता,
चाँद छोड़ कर गया है चाह में मुझे॥
अश्रु बह रहे हैं और जल रही चिता।
किन्तु चाह है अभी भी आह में मुझे॥

श्वास चल रहे हैं और देह चल रही।
किन्तु दो चिता में एक लाश जल रही॥
प्यार जल रहा है जिन्दगी न हँस यहाँ।
क्या पता कि छोड़ दे मंजिल तुझे कहाँ॥

श्वास श्वास ही में मौत पास आ गई—
राख की दुलहन मिली कि ब्याह में मुझे॥
अश्रु बह रहे हैं और जल रही चिता।
किन्तु चाह है अभी भी आह में मुझे॥

प्यार का मधु माँगता है जिन्दगी का दान।
मुस्करा कर प्राण देना प्यार का सम्मान॥

लोचनों की निधि जवानी की चिता बन कर मचलती।
प्यार की कविता जगत की आग में रह कर न जलती॥
देह जल जाती मगर दो प्यार की बातें न जलतीं।
चाँदनी रातें किसी की चार दिन भी तो न चलतीं॥

मरण करता है जन्म के हास का उपहास शव पर,
आँसुओं का कौन करता है यहाँ सम्मान।

प्यार का मधु माँगता है जिन्दगी का दान।
मुस्करा कर प्राण देना प्यार का सम्मान॥

यह न वह मधु जो कि प्यालों की मिले रंगीनियों में।
यह न वह रस जो कि फूलों की खिले रंगीनियों में॥
यह किसी के आँसुओं की आग में जलता मिलेगा।
प्यार का अलि ठोकरों के फूल पर चलता मिलेगा॥

प्रेम के बदले यहाँ पर विश्व ने सीखा रुलाना,
कौन करता है किसी के दुःख का कुछ ध्यान।

प्यार का मधु माँगता है जिन्दगी का दान।
मुस्करा कर प्राण देना प्यार का सम्मान॥

आँसुओं में छोड़ जाता हर पथिक अपनी कहानी।
देह जलती है चिता में प्यार में जलती जवानी॥
पर नहीं पत्थर पिघलते जिन्दगी के आँसुओं से।
फूट कर छाले निकलते जिन्दगी के आँसुओ से॥

गीत बनते हैं किसी की याद के आँसू बिखर कर,
लक्ष्य तो मालूम मंजिल की नहीं पहिचान।

प्यार का मधु माँगता है जिन्दगी का दान।
मुस्करा कर प्राण देना प्यार का सम्मान॥

५२

जिन्दगी में प्यार का आधार झूठा है,
चार दिन की जिन्दगी में प्यार झूठा है,
एक बुझ रही चिता एक जल रही ।

प्यार के संसार में अंगार के आँसू ।
टूटते रहते धरा पर प्यार के आँसू ॥
क्यों बना इस विश्व में तू प्यार का भिक्षुक ।
क्यों बना तू जिन्दगी में हार का भिक्षुक ॥

पुण्य के मसार में ओ प्यार के पागल ।
एक आँख उठ रही एक छल रही ।
जिन्दगी में प्यार का आधार झूठा है,
चार दिन की जिन्दगी में प्यार झूठा है,
एक बुझ रही चिता एक जल रही ॥

प्र
ति
ध्व
नि

धूलि भी तो प्यार का अपमान करती है।
हार ही तो आँसुओं का दान करती है॥
चल, चिता के पास रोता प्यार दिखलाऊँ।
चल, तुझे मैं जिन्दगी की हार दिखलाऊँ॥

चार दिन की जिन्दगी मे ढल रहा जीवन,
एक उग रही किरण एक ढल रही॥
जिन्दगी में प्यार का आधार झूठा है,
चार दिन की जिन्दगी मे प्यार झूठा है,
एक बुझ रही चिता एक जल रही॥

अभिसार हँस रहा कि मृत्यु कर रही मातम।
हा! अश्रु बन बहा कि काव्य पर वही मातम॥
जल रही है प्यार के अभिसार की होली।
फुक रही है प्राण के शृङ्गार की रोली॥

जिन्दगी की शाम ही तो हार है पागल।
एक शाम गा रही एक ढल रही।
जिन्दगी में प्यार का आधार झूठा है,
चार दिन की जिन्दगी में प्यार झूठा है,
एक बुझ रही चिता एक जल रही॥

५३

कहानी कह रही कोई, कफन में जिन्दगी लिपटी।
जवानी कह रही गा गा, चाँदनी से चिता चिपटी॥

जिसे तुम रूप कहते हो, अरे वह धूल मुट्ठी भर।
युगों से तुम मनाते हो, दिवाली लाश के ऊपर॥
चिता का धूम्र बन कर रेशमी मृदु बाल उड़ जाते।
चिता की आग में हँसते, चिता की राख मे गाते॥

युगों की बन गई कविता, कहानी राख में सिमटी।
कहानी कह रही कोई, कफन में जिन्दगी लिपटी।
जवानी कह रही गा गा, चाँदनी से चिता चिपटी।

गुलाबी गाल पल्लव से, अधर रसहीन हो जाते।
जन्म में खोलते आँखें, मरण में मूँद सो जाते॥
हवा के एक झोखे को, जिन्दगी कह रही दुनिया।
राख में रूप मिल जाता, राख में रह रही दुनिया॥

न चिपटा देह से कोई, चिता से देह जब चिपटी।
कहानी कह रही कोई, कफन में जिन्दगी लिपटी।
जवानी कह रही गा गा, चाँदनी से चिता चिपटी॥

रेत में बह रही गगा लिये कुछ याद के दीपक।
स्वर्ग को ढूँढने निकले किसी प्रासाद के दीपक।
अतुल अवसाद के दीपक।

वर्ष भर याद में रो रो कौन दीपक जलाती है।
बहा अरमान गगा में कौन दीवे बहाती है॥
किसी की याद मे दीपक जलाये जा बहाये जा।
किसी की याद में जीवन गलाये जा जलाये जा॥

मगर लहरें बुझा देगी किसी की याद के दीपक।
रेत में बह रही गंगा लिये कुछ याद के दीपक।
अतुल अवसाद के दीपक।

अरी पगली! न यम के राज मे आँसू पहुँचता है।
अरी पगली! व्यर्थ ही प्रीति का पत्ती कुहुकता है॥
किसी के प्यार का दीपक जला, जल कर बुझा जग मे।
जला दे देह का दीपक किसी के प्यार के मग मे॥

युगों से टूटते जलते, गगन में चाँद के दीपक।
रेत मे बह रही गगा लिये कुछ याद के दीपक।
अतुल अवसाद के दीपक।

५५

स्नेह किसी का भर कर उर में, दीपक जलता रहा रात भर ।
वह आयेगी इस आशा मे, दीपक जलता चौराहे पर ॥

इधर उधर दायें बाये से, जो भी आता उसे देखता ।
चौराहे पर छोड़ कहानी, जो भी जाता उसे देखता ॥
पैरों की आहट पाते ही, धक से लौ कम्पित हो जाती ।
किन्तु न पा कर प्राण-दीपिका, आशा मरघट में सो जाती ॥

सहसा स्वप्न भंग हो जाता, पानी फिर जाता आशा पर ।
स्नेह किमी का भर कर उर में, दीपक जलता रहा रात भर ॥

निर्मोही वह कुम्भकार है, जिसने सुन्दर दीप बनाया ।
निर्मोही वह रूप जवानी, जिसने भर कर स्नेह जलाया ॥
पगली है वह दीपशिखा जो, पाकर स्नेह हँसी पल भर को ।
पागल वह अपमानित आँसू, जिसने प्यार दिया जलधर को ॥

आकर मेघ चले जाते हैं, दीप जलाता रहता अम्बर ।
स्नेह किमी का भर कर उर में. दीपक जलता रहा रात भर ॥
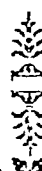
प्यार पाया था निशा ने, धरा पर बरसा उजाला।
हँस उठी मन की जवानी, खिल उठा यौवन निराला॥

चाँद मुस्काने लगा था, दीप सोने के जला कर।
मौन लहराने लगा था, प्यार का हिमगिरि गला कर॥
ज्योत्सना झरने लगी थी, सृष्टि की गुम्फित कला पर।
शब्द सारे सो गये थे, पर मुखर था प्रीति का स्वर॥

रूप की रानी अशिक्षित, ओढ़ आई सित दुशाला।
प्यार पाया था निशा ने, धरा पर बरसा उजाला॥

बाँह में बन्दी किया था, बाँध कर सारी प्रकृति को।
खींच लाया था दृगों में, प्राणप्रिय प्यारी प्रकृति को॥
किन्तु जब मचले अधर दो, हिल उठे पल्लव उसी क्षण।
प्रलय सा आया प्रभंजन, हिल गये तृण क्षीण, कण कण॥

मरण मँडराया मिलन में, ले विरह की तप्त ज्वाला।
प्यार पाया था निशा ने, धरा पर बरसा उजाला॥

प्रकृति ने खोला घूँघट प्रिये ! अमृत की वर्षा होने दो ।
आज जंगल में मगल हुआ, आज तो पीड़ा सोने दो ॥

उठो, फूलों में कर ले नृत्य, प्रीति को रुनझुन करने दो ।
सुनो कुछ, और कहो कुछ प्रिये । मरण मे जीवन भरने दो ॥
रूप की निर्झरणी । गा गीत, प्रीति को खुल कर गाने दो ।
गीतिके ! मचल रहा है मधुप, अधर अधरों तक जाने दो ॥

लाज का घूँघट खोलो प्रिये । लाज को पीड़ा धोने दो ।
प्रकृति ने खोला घूँघट प्रिये । अमृत की वर्षा होने दो ॥
आज जगल में मंगल हुआ, आज तो पीड़ा सोने दो ।

विश्व को कहने दो यह पाप, पुण्य को शर्माने भी दो ।
प्रकृति की मुस्कानों के बीच, प्यार को मुस्काने भी दो ॥
हृदय की निधियाँ खोलो प्रिये ! जिन्दगी का मधु पीने दो ।
प्राण । जब जीना ही है यहाँ, जवानी भर कर जीने दो ॥

स्वर्ग की छन्दमयी मुस्कान । प्यार में पीड़ा खोने दो ।
प्रकृति ने खोला घूँघट प्रिये । अमृत की वर्षा होने दो ॥
आज जगल में मगल हुआ, आज तो पीड़ा सोने दो ।

आज नियति नाराज हुई है।

तनिक छेड़ने से रो पड़ता, व्यथित हिमालय फूट रहा है।
जीवन के रहते जीवन का, बाँध विदा से टूट रहा है॥
रजनी रोती रही रात भर, रात रात भर तारे टूटे।
आज चाँद भी गिरा गगन से, आज भाग्य अम्बर के फूटे॥

जीवन जलने लगा जलद से, जल से पैदा गाज हुई है।
आज नियति नाराज हुई है॥

धरती समतल कहाँ यहाँ तो, एक एक की अति सहता है।
यहाँ किसी का कौन यहाँ तो, प्यार अश्रु बन कर बहता है॥
बुरे समय में अपनापन भी, अपना साथ छोड़ देता है।
दुनिया छेड़ चली जाती है, मेरा मानस रो लेता है॥

छू कर प्राण छिपे तुम मुझमे, आज जिन्दगी छुई मुई है।
आज नियति नाराज हुई है॥

५६

क्यों किसी से बात कहते हो हृदय की बात।
जिन्दगी की रात होती है, विरह की रात॥

हृदय की निधि खुल गई यदि,
आँसुओं में घुल गई यदि,
बात जग ने जान ली यदि,
पीर कुछ पहिचान ली यदि,

गिर पड़ेंगे टूट कर फिर तो सुनहरी पात।
क्यों किसी से बात कहते हो हृदय की बात।
जिन्दगी की रात होती है, विरह की रात॥

रात रहने दो अँधेरी,
आँख रहने दो तरेरी,
क्यों कि जग होता सबल का,
प्यार कैसा जल कमल का,

क्या सुनहरी रात है जल में, जलज की रात।
क्यों किसी से बात कहते हो हृदय की बात।
जिन्दगी की रात होती है विरह की रात॥

कहाँ बह चले आँसुओ ! छोड़ आँखें ?
चले ढूँढने लोचनों का सहारा ।
उतर स्वर्ग से दीप आया धरा पर,
दृगों को मिला अर्चना का सितारा ॥

बिना दीप के जो तिमिर रो रहा था,
चरण ज्योति पा हँस उठा वह अँधेरा ।
जिसे ढूँढते ढूँढते सो गये हम,
हमें मिल गया रात मे वह सवेरा ॥

उठा आँसुओं को कहा रश्मियों ने—
बरसते रहे अर्घ्य बन कर पगों पर ।
न समझो कि भारत गिरा जा रहा है,
उसी देवता के पगों में झुका सर ॥

अमर सन्तरण सिन्धु में जब कि कूदा,
कि मँझधार भी बन गया था किनारा ।
कहाँ बह चले आँसुओ ! छोड़ आँखें ?
चले ढूँढने लोचनो का सहारा ।
उतर स्वर्ग से दीप आते धरा पर,
दृगों को मिला अर्चना का सहारा ।

वह दीपक दिवगत पर ज्योति बाकी,
उसी ज्योति पर तो शलभ घिर रहे हैं।
दिखा पथ रही स्वर्ग की ज्योति जग मे,
पतगे उसी ज्योति पर तिर रहे हैं॥

चिता जल गई पर न दीपक बुझा वह,
अगर दीप बुझता शलभ क्यों बरसते ?
विजय दीप पर जो न जलते शलभ से,
अमर पुंज के पाँव पा वे तरसते॥

चरण चूम कर यह कहा आँसुओं ने—
हमें मिल गया अर्चना का सितारा।
कहाँ वह चले आँसुओ! छोड आँखें ?
चले ढूँढने लोचनों का सहारा॥
उतर स्वर्ग से दीप आया धरा पर,
दृगों को मिला अर्चना का सितारा॥

नवागी

६१

साधना हारी मरण से योग भी हारा।

मृत्यु! तेरा आज है अन्याय धरती पर।
आज जिन्दी ज्योति का लाई कफ़न सी कर॥
यह तुझे क्या हो गया यमराज की रानी।
पी गई भर घूँट आत्मा, सिन्धु का पानी॥

मृत्यु! तेरा सत्य यह संसार है सारा।
साधना हारी मरण मे योग भी हारा॥

हा। धरा की दृष्टि का अरविन्द भी तोड़ा।
योग का दिनमान भी तूने नहीं छोड़ा॥
कौन है ऐसा जिसे तूने नहीं खाया।
फूल ने खिल कर धरा पर बस तुझे पाया॥

टूटते ही मिट गया आकाश का तारा।
साधना हारी मरण से योग भी हारा॥

'राम' का वह 'कृष्ण' का इतिहास बाकी है।
अमर भी होंगे कहीं विश्वास बाकी है॥
किन्तु उन सब की निशानी धूल धरती की।
खा गई भगवान को भी भूल धरती की॥

मृत्यु की ही बनी है इतिहास की धारा।
साधना हारी मरण से योग भी हारा॥

'बुद्ध' धरती में मिले 'गाँधी' गये जग से।
एक क्या कितने न जाने उड गये खग से॥
इस धरा पर क्या धरा आँसू बहाने में!
मृत्यु को आनन्द मिलता है रुलाने मे!!

धूल हम हैं और जग शमशान है सारा।
साधना हारी मरण से योग भी हारा॥

रात में रवि डूबता है प्रलय में पवि भी।
काव्य रहता किन्तु मरता एक दिन कवि भी॥
सृष्टि श्वासों की यहाँ पर देह है मिट्टी।
मरण सच है आँसुओं का मेह है मिट्टी॥

बुलबुला उठ मिट गया बहती रही धारा।
साधना हारी मरण से योग भी हारा॥

६२
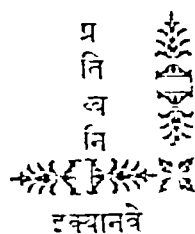
पगों मे तम भर गया, लक्ष्य पर दीप जला कर ।
विजय ने मानी हार, ध्वजा जब उड़ी शिखर पर ॥

अन्त मंजिल का नहीं, पथिक ! हर प्रथम चरण है ।
अन्त पीड़ा का नहीं, पथिक ! हर श्वास मरण है ॥
मृत्यु जिनकी जय-नाव, जीतते वे रहते हैं ।
विश्व मे पग विश्राम– हार ही को कहते हैं ॥

झुके हर युग की दृष्टि, पथिक के अमर चरण पर ।
पगों मे तम भर गया, लक्ष्य पर दीप जला कर ॥

शयन जीवन में तभी– पैर जब पथ बन जाये ।
ज्योति जलने को नहीं, दीप से दीप जलायें ॥
पग न रोके से रुकें, चिता जलने से पहिले ।
हार क्यों बैठे पथिक, थकित । चलने से पहिले ॥

पगों में दीपक जला, तिमिर तू अन्तर का हर ।
पगों में तम भर गया, लक्ष्य पर दीप जला कर ॥

आँसू में ज्वाला जलती है, जल में जीवन जला जा रहा।
देखो यह जीवन का मुर्दा, दो कन्धों पर चला जा रहा॥

यह बरसाती राह बिजलियों के दीपक लेकर चलती है।
यह आँख की आग, ज़िन्दगी जिसकी ज्वाला में जलती है॥
यह मेरी ही हार पूछती, मुझसे जीवन की परिभाषा।
यह मेरी ही चिता बन गई, मेरे जीने की अभिलाषा॥

आयु घटी जाती है प्रतिपल, पल पल जीवन गला जा रहा।
आँसू में ज्वाला जलती है, जल में जीवन जला जा रहा॥

शैशव ने आकर जीवन में, जीवन को दी नयी जवानी।
किन्तु जवानी ने जीवन पर, करी बहुत अपनी मनमानी॥
उठी जवानी, गिरी जवानी, कमर झुकी, आ गया बुढ़ापा।
चौराहे पर खड़ी वेदना, पीट रही है अपना आपा॥

जीवन की सन्ध्या आ पहुँची, सुख का सूरज ढला जा रहा।
आँसू में ज्वाला जलती है, जल में जीवन जला जा रहा॥
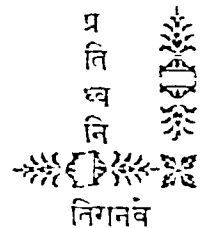
तुम जिसको जीवन कहते हो, वह तो अन्तर्दाह बन गया।
तुम जिसको दीपक कहते हो, वह तो जलती राह बन गया॥
तुम जिस मदिरा को पीते हो, वह तो व्यथा दुखी बाला की।
तुम जिसको मुस्कान समझते, वह तो दमक हृदय-ज्वाला की॥

मेरा पुष्प क्रूर हाथों से, मेरे आगे मला जा रहा।
आँसू मे ज्वाला जलती है, जल मे जीवन जला जा रहा॥

अरे प्रेम का अर्थ, प्यास का बढना, अंगारों को चुगना।
अरे विरह का अर्थ, दृगों से ढलना, नभ-तारों को चुगना॥
अरे वही जीवन है जिसमे, अन्तर्ज्वाला का प्रकाश है।
पी जाओ तुम पाप धरा का, अरे नही तो व्यर्थ प्यास है॥

अन्तर के प्रकाश को खोकर, किसे ढूँढने चला जा रहा।
आँसू में ज्वाला जलती है, जल मे जीवन जला जा रहा॥

तुम जिसको अभिमान मानते, वह तो दान आँसुओं का है।
तुम जिसको गाना कहते हो वह तो गान आँसुओं का है॥

जग का मौन भिखारी तुमसे, मानवता का मान माँगता।
यह जीवन का गीत जगत से, पीड़ा की पहिचान माँगता॥
यह आँखों का अर्घ्य धरा से, धरती का भगवान माँगता।
यह श्वासों का राग भिखारी, जन जन का सम्मान माँगता॥

सब अपनी दुनिया में रमते, किसको ध्यान आँसुओं का है।
तुम जिसको अभिमान मानते, वह तो दान आँसुओं का है॥

गात बिखर जायेगी आँसू! मत कह मन की बात किसी से।
रात रात भर जलते हैं पर, तारे रहते मौन इसी से॥
माना मेघ बरस पड़ते हैं, जब दम घुट जाता श्वासों से।
पर क्या फूल खिले पत्थर पर, वह तो पूछो उन प्यासों से॥

कोई मुझे बताये आकर, क्यों अपमान आँसुओं का है।
तुम जिसको अभिमान मानते, वह तो दान आँसुओं का है॥

मन का ऐसा मैल कि जिस से, गंगाजल मैला होता है।
रूप ! अर्चना का अभ्यासी, मोती आँखों में रोता है॥
आँसू यदि धरती पर फूटा, तो फिर तुम परिणाम सोच लो।
धरती पर क्या हो जायेगा, धरती के विश्राम ! सोच लो॥

जिसे क्रान्ति कहती है दुनिया, वह भी गान आँसुओं का है।
तुम जिसको अभिमान मानते, वह तो दान आँसुओं का है॥

प्रलय पीर में लिये बह रहा, यह दो बूँद दृगों का पानी।
महाशक्ति की महाशक्ति है, आँखों की दुख भरी कहानी॥
सम्राटों की निष्ठुरता से, सोयी पीड़ा जाग उठेगी।
हँसनेवालो ! मुझे न छेड़ो, आँसू में से आग उठेगी॥

तुम जिस मदिरा को पीते हो, वह तो पान आँसुओं का है।
तुम जिसको अभिमान मानते, वह तो दान आँसुओं का है॥

कहीं गगनचुम्बी महलों पर, आँसू थिरके नाश न नाचे।
कहीं अश्रु की व्यथा देखकर, धरती पर आकाश न नाचे॥
कहीं रुद्र का डमरू सुनकर, वीणा की झनकार न टूटे।
कहीं अश्रु की धार धरा पर, बन करके अंगार न फूटे॥

फिर तुम यह मत कहना मुझसे, यह अज्ञान आँसुओं का है।
तुम जिसको अभिमान मानते, वह तो दान आँसुओं का है॥

अरे नींद यह कैसी जिसमें, स्वप्न जागरण बना जा रहा।
जिन्दे मानव की अर्थी पर, मरघट का अंगार गा रहा॥
ओ तारों को छूनेवाले! धरती पर चलना तो सीखो।
दीपक से मिलना है यदि तो, दीपक से जलना तो सीखो॥

तुम जिसको कवि कह कर हँसते, वह इंसान आँसुओं का है।
तुम जिसको अभिमान मानते, वह तो दान आँसुओं का है॥

पी जाये मँझधार प्यास जो, मैं तो प्यास उसे कहता हूँ।
जो हँसकर दुख का विष पीले, मैं तो श्वास उसे कहता हूँ॥
जो प्राणों का दीप जलादे, मैं तो प्यार उसे कहता हूँ।
जो अपने मन से हारा हो, मैं तो हार उसे कहता हूँ॥

जो न हारता कभी मरण से, ऐसा गान आँसुओं का है।
तुम जिसको अभिमान मानते, वह तो दान आँसुओं का है॥

सहते सहते दुःख सखे ! अब, मुझे दुःख से प्यार हो गया ।
जिसे गरल कहते हो वह तो, नीलकण्ठ का हार हो गया ॥

दुख का विष पीने से पहिले,
सुख का स्वर्ग नहीं मिलता है ।
काँटों में रहने से पहिले,
फूल गुलाबी कब खिलता है ?

दुख को गले लगाया जिसने,
मैने उसको प्यार किया है ।
मै न डूबने का आँसू मे,
मैने तो मँझधार पिया है ॥

सुख से दूर बस गया मै अब, दुख मेरा ससार हो गया ।
सहते सहते दुःख सखे ! अब, मुझे दुःख से प्यार हो गया ॥

फूलो ! अपनी मधुर सुरभि का थोड़ा सा मधु पी लेने दो ।
दुनिया भर की तिमिर राशि को रूप किरण मे जी लेने दो ॥

सुन्दरता का अमृत छिड़क कर,
जीवन को मधुमास बना दो ।
तुम में मुझ में भेद न रह कुछ,
मेरी ऐसी प्यास बना दो ॥

रूप सरोवर में मुझको तुम,
चुगने दो जीवन के मोती ।
हारी हुई जिन्दगी तुमसे,
प्यार माँगती रोती रोती ॥

लहराती इस धारा में से, रूप मुझे भर भी लेने दो ।
फूलो ! अपनी मधुर सुरभि का थोड़ा सा मधु पी लेने दो ॥

बैठे रहो सामने मेरे, सुनते रहो कहानी ।
तुम्हें देखने से रुक जाता, आँखों ही में पानी ॥

स्वर्गों के सौन्दर्य सुवासित ! मेरी ओर निहारो ।
भावों के भगवान ! भूलकर, मेरी भूल सुधारो ॥
रिझा न पाये तुम्हें आज तक, मेरे भाव जरा से ।
मधु के प्यासे अधर तुम्हारे, चरणामृत के प्यासे ॥

नयनों की मुस्कान ! मुझे तुम, अर्घ्य हेतु दो पानी ।
बैठे रहो सामने मेरे, सुनते रहो कहानी ॥

सारी धरती ढूँढ चुका मैं, ढूँढा सारा अम्बर ।
मिला न रूप अनूप कहीं भी, झाँक चुका मै दर दर ॥
मिली आँख जब तुमसे मेरी, मैं भूला सुख पाया ।
तुम्हें समझ कर अपना मैंने, अपना दर्द सुनाया ॥

तुमको पाकर पाई मैने, खोयी हुई जवानी ।
बैठे रहो सामने मेरे, सुनते रहो कहानी ॥

प्र
ति

मौन ही रहो मगर न दूर तुम रहो,
तुम न दो जवाब किन्तु बात मैं कहूँ ।

भूल तब करी न जब कि पीर थम सकी ।
रोकता रहा मगर न आग जम सकी ॥
द्वार द्वार पर मुझे बुरा कहा भले !
आग इस लिये गली कि जग-तिमिर जले ॥

दीप जल रहा कि दूर प्यार की विभा,
मूक ! दान दो यही कि रात मैं रहूँ ।

मौन ही रहो मगर न दूर तुम रहो,
तुम न दो जवाब किन्तु बात मैं कहूँ ॥

मैं गरीब हूँ मगर न साधना रुकी।
पग न दूर को हटे कि भावना झुकी॥
इस लिये झुकी कि तुम उसे निहार लो।
इस लिये झुकी कि तुम उसे दुलार लो॥

हार इस लिये बना कि जीत तुम रहो,
जीत तुम बने रहो कि मात मैं रहूँ।

मौन ही रहो मगर न दूर तुम रहो,
तुम न दो जवाब किन्तु बात मैं कहूँ॥

कौन सा गरल जिसे न प्रीति ने पिया।
कौन वह मनुष्य जो न आश पर जिया॥
प्रीति की कि दुःख एक भूल ने दिया।
हर मनुष्य ने यहाँ रटा पिया। पिया।

पर न बोलता पिया, पुकारता रहा,
इस लिये कि एक और बात मैं कहूँ!

मौन ही रहो मगर न दूर तुम रहो,
तुम न दो जवाब किन्तु बात मैं कहूँ॥

पुकारता रहा तुझे मगर न तू रुका,
इसीलिये कि मैं न आरती सजा सका।

झुकी रही निगाह नीर से भरी हुई,
रुकी रही जबान लाज से मरी हुई,
जमीन देखता रहा न आँख उठ सकी,
जमीन थक गई मगर न भावना थकी,

निहारता रहा मगर न तुम निहारते,
इसीलिये कि मैं न आरती सजा सका।

पुकारता रहा तुझे मगर न तू रुका,
इसीलिये कि मैं न आरती सजा सका॥

इधर उधर तुझे सदा निहारता रहा,
गया किधर छिपा किधर विचारता रहा.
बजा रहा सितार कौन वायु में बँधा,
विचार में न आ सका न आयु में बँधा,

दुलारता रहा मुझे कहीं छिपा छिपा,
उठे न नेत्र और मैं न गा बजा सका।

पुकारता रहा तुझे मगर न तू रुका,
इसीलिये कि मैं न आरती सजा सका॥
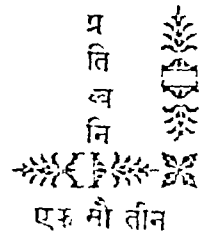
गा रहा हूँ गीत मैं इस आश पर—
जी उठे शायद किसी दिन मृतक मन ।

जानता हूँ जिन्दगी अभिशाप है,
मानता हूँ प्यार मधु का ताप है,
किन्तु फिर भी जिन्दगी में चाह है,
किस अपरिचित की न जाने राह है,

इस लिये गाता रहा मैं शून्य में,
एक दिन शायद मिलें उस में नयन ।
गा रहा हूँ गीत मैं इस आश पर—
जी उठे शायद किसी दिन मृतक मन ॥

गीत ! जा, उड़ जा अरे उस देश में,
प्यार का आधार है जिस देश में,
ढूँढ आ, शायद मिले कोई कहीं,
और फिर ले चल अरे मुझको वहीं,

प्यार ठुकराया न जाता हो जहाँ—
गीत लेकर उड़ वहाँ चंचल पवन ।
गा रहा हूँ गीत मैं इस आश पर—
जी उठे शायद किसी दिन मृतक मन ॥

बोल, कुछ तो बोल ओ नीहारिका !
बोल, कुछ तो बोल नभ की तारिका !
स्वर्ग के सौन्दर्य ! कुछ तो बोल दे,
स्वर्ग की मुस्कान ! घूँघट खोल दे,

यवनिका शायद उठे उस रूप की,
इस लिये करता रहा आँसू चयन।

गा रहा हूँ गीत मैं इस आश पर—
जी उठे शायद किसी दिन मृतक मन॥

स्वर्ग के रथ की न मुझको कामना,
ढूँढता हूँ मैं यहीं सद्भावना,
स्वर्ग को भी मैं यहाँ लज्जित करूँ,
रूप पाकर रूप कुछ ऐसा भरूँ,

रात भर दीपक लिये गाता रहा,
इसलिये रूठा रहा मुझसे शयन।

गा रहा हूँ गीत मैं इस आश पर—
जी उठे शायद किसी दिन मृतक मन॥

तारकों ने एक दिन मुझसे कहा—
स्वर्ग तेरे सामने शर्मा रहा,
किन्तु फिर भी स्वर्ग के इच्छुक नयन,
कौन सी मंजिल जहाँ मेरा मयन,

कर रहा पूजा इसी विश्वास पर—
एक दिन शायद मिले तेरा भवन।

गा रहा हूँ गीत मैं इस आश पर—
जी उठे शायद किसी दिन मृतक मन॥

तुम अगर मिलो तो जिन्दगी मुझे मिले ।
तुम अगर हँसो तो रात में जलज खिले ॥

मिला न एक भी जिसे कि प्यार भेंट दूँ ।
कि एक भी नहीं जिसे दुलार भेंट दूँ ॥
न एक भी मिला कि जो न देवता बना ।
कि जो मिला वही मनुष्य से मिला घना ॥

कि तू तुझे मिले मगर न मै तुझे मिले,
तुम अगर मिलो तो जिन्दगी मुझे मिले,
तुम अगर हँसो तो रात में जलज खिले ।

न एक बार मैं हजार बार रो चुका ।
न एक बार हाँ हजार बार सर झुका ॥
मगर न एक भूल भी कभी भली हुई ।
न प्यार की सुरा कहीं मिली ढली हुई ॥

तुम अगर मिलो तो प्यार का हृदय खिले,
तुम अगर मिलो तो जिन्दगी मुझे मिले,
तुम अगर हँसो तो रात में जलज खिले ।

तुम मुझे मिले कि स्वप्न सत्य हो गया,
मुस्करा उठी धरा दुलार के लिये ।

देवता झुके मनुष्य देवता बना ।
चाँदना मनुष्य का सुधांशु पर छना ॥
देवता ! पियो, सुधा पिला रहा मनुज ।
जी उठो मृतक ! तुम्हे जिला रहा मनुज ॥

तुम मुझे मिले कि स्वर्ग भूल बन गया,
हाथ बढ गये अनेक प्यार के लिये ।
तुम मुझे मिले कि स्वप्न सत्य हो गया,
मुस्करा उठी धरा दुलार के लिये ॥

तुम मुझे मिले कि मैं न काल से मरा ।
तुम मुझे मिले कि मैं न व्याल से डरा ॥
एक दीप रात को प्रकाश दे गया ।
एक दीप विश्व को विकास दे गया ॥

तुम मुझे मिले कि मुक्ति-ज्योति मिल गई,
भूल ढूँढता फिरा सुधार के लिये ।
तुम मुझे मिले कि स्वप्न सत्य हो गया,
मुस्करा उठी धरा दुलार के लिये ॥

७३

जाने वाले! मेरी बिगड़ी बात बनाता जा।
मरने वाले! मुझे विश्व की राह बताता जा॥

जीने वाले को इस जग में,
जीने का बल दे।
प्रश्न दिये हैं तूने ही जब,
तो तू ही हल दे॥

मेरे उत्तर से इस जग को,
शान्ति नहीं होती।
बार बार पाषाणों पर गिर–
टूट गये मोती॥

जाने वाले! इस दुनिया को बात बताता जा।
जाने वाले! मेरी बिगड़ी बात बनाता जा॥

जग के चौराहे पर रोती,
मेरी गति पगली ।
मेरे जल मे तड़प रही है,
मेरी मन मछली ॥

मुझे देख कर हँस देते हैं,
मेरे ही प्याले ।
मेरी नियति, नीति दुनिया की,
तू रुक कर गा ले ॥

दुनिया में रहने वाले को दीप दिखाता जा ।
जाने वाले ! मेरी बिगड़ी बात बनाता जा ॥

बरस रहे बादल, गगन में रोता है कोई ।
मेघ बने पागल, प्रीति की उजियाली सोई ।।

कौंध रही बिजली,
प्यार की मन में आग उठी ।
याद बनी पगली,
प्रीति की पीड़ा जाग उठी ।।

बूँद बूँद बरसी,
नयन की निर्मल मधुर हँसी ।
प्यास बुझी किसकी,
रूप की रानी चतुर फँसी ।।

मानस के मोती, धरा पर बोता है कोई ।
बरस रहे बादल, गगन में रोता है कोई ।।

चार आँसू के दिये तुमने दिये ।
फूल से हम भूल से हँस कर जिये ॥

गा मनोहर गीत कोई हृदय गा ।
गा धरोहर गीत कोई हृदय गा ॥
यह तुम्हारी याद का मधु नीर है ।
प्यार की पहिचान पगली पीर है ॥

मै न रोता स्वर्ग पाने के लिये ।
चार आँसू के दिये तुमने दिये ॥

प्यार का दीपक हृदय में जल रहा ।
फूल दीपक का दृगों से ढल रहा ॥
प्रिय ! तुम्हारे रूप का सौरभ लिये–
रात दिन जलते सलोने दो दिये ॥

तुम हृदय में हृदय गाने के लिये ।
चार आँसू के दिये तुमने दिये ॥

जग के अणु अणु मे आकर्षण, आकर्षण में बन्धन ।
बन्धन में से फूट रहा है, प्रिय प्राणों का क्रन्दन ॥

आकर्षण देने आता है,
रोदन का आमन्त्रण ।
जन्म मरण के लिये हुआ है,
जीवन ढलता क्षण क्षण ॥

जग में रूप, रूप में ज्वाला,
मैंने ज्वाला पकड़ी ।
हार गया मैं जब इस जग से,
मैंने माला पकड़ी ॥

अमृत बहुत है इस सागर में, कर न सका मैं मन्थन ।
जग के अणु अणु में आकर्षण, आकर्षण में बन्धन ॥
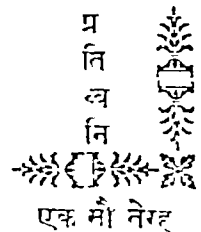
मैंने माला पकड़ी, लेकिन–
मुझे रूप ने पकड़ा ।
मेरे पैरों को दुनिया के–
इन्द्रजाल ने जकडा ॥

मेरे मानस ! इंगित करके,
बन्दी करो न मुझको ।
सुषमा का ससार सौंपता,
सत्य भेंट मे तुझको ॥

मेरा मुझ में क्या रक्खा है, तेरा है तन मन धन ।
जग के अणु अणु में आकर्षण, आकर्षण में बन्धन ॥

किसी को प्यार करने का, हृदय में भाव बाकी है।
कभी का मर चुका फिर भी, मृत्यु का चाव बाकी है॥

हृदय में हूक उठती है,
मगर बेकार उठती है।
टूट कर गिर पड़ी वीणा,
व्यर्थ झनकार उठती है॥

किसी की याद में गाता,
मगर प्रतिध्वनि यही कहती।
किसी की याद मे गंगा,
युगो से आज तक बहती॥

अभी उर मे हिमालय के, सुता का घाव बाकी है।
किसी को प्यार करने का, हृदय में भाव बाकी है॥

अभी मैं चौंक उठता हूँ,
कहीं पग ध्वनि किसी की सुन।
किसी की याद के मोती,
अभी मै धर रहा चुन चुन ॥

मगर मिलता न वह मुझको,
जिसे मैं चाहता प्रतिपल।
श्वास पर गीत गाती है,
जिन्दगी की चिता जल जल ॥

मुझे मुस्कान देने को, मृत्यु की नाव बाकी है।
किसी को प्यार करने का, हृदय मे भाव बाकी है ॥

किसी को देखता हूँ जब,
किसी की याद आती है।
किसी की याद में सारी,
कहानी बीत जाती है॥

अधर हँसते रहे लेकिन—
न मेरी जिन्दगी हँसती।
अगर मै भूल बन जाता,
न मेरी भावना फँसती॥

किसी की कामना आकर,
कहानी बन गई पगली।
किसी को सामने देखा,
जवानी बन गई पगली॥

व्यर्थ नश्वर जगत में मैं,
प्यास बुला उठाती है।
किसी को देखता हूँ जब,
किसी की याद आती है॥

प्रतिध्वनि

रूप-राशि की रश्मि खेलती, मेरी चंचलता से ।
मानस के जल में थिरकन है, तरल तरंग गता से ॥

मेरा अन्तर रँग देती है,
प्रिय ! तेरी रगीनी ।
तेरे सौरभ से सुरभित हो,
भावों की निधि बीनी ॥

तेरे रस में तैर रहा है,
मेरा मानस उज्ज्वल ।
तेरी पूजा को उत्सुक है,
प्रिय ! मेरा उर-उत्पल ॥

आकुल अन्तर खिंच जाता है, तेरी कुन्तलता से ।
रूप-राशि की रश्मि खेलती, मेरी चंचलता से ॥

खुले रूप के नयन निमिष से,
टूट गये व्रत सारे।
संयम दीप जलाकर बोला,
प्रिय! आँखों के तारे॥

सुधा स्नात! मेरे यौवन में,
उज्ज्वलता छलका दे।
दृग-दर्पण में रूप-राशि की,
अमर ज्योति झलका दे॥

थिरक थिरक कर रूप खेलता, मेरी निर्बलता से।
रूप-राशि की रश्मि खेलती, मेरी चंचलता से॥

ओ मेरे आधार । छीन मत, मुझमे मधु का प्याला ।
मुझ को जीवन का मधु देती, जीवन की मधु ज्वाला ॥

प्रिय । मेरा आधार रूप है,
अमृत न मुझसे छीनो ।
रूप-तृषित आँखो के मोती,
रूप-राशि से बीनो ॥

मुझे रूप की प्यास, प्राणप्रिय !
प्यासे अधर बनो तुम ।
रहे न एक अभाव प्राण ! धन,
मेरे अगर बनो तुम ॥

मुझसे दूर हटे यदि पग तो, धधक उठेगी ज्वाला ।
ओ मेरे आधार । छीन मत, मुझसे मधु का प्याला ॥

मुझ को ऐसा मधु दे जिसमे—
जग की आग न धधके ।
मुझ को ऐसा रस दे जिस से—
सरस अधर हों सब के ॥

भावों में हो अमृत, अमृत मे—
हो कोयल की भाषा ।
ऐसी मुझे पिला दो प्रियतम !
मिट जाये अभिलाषा ॥

ले लो जग की सारी निधियाँ, दे दो अपनी माला ।
ओ मेरे आधार ! छीन मत, मुझसे मधु का प्याला ॥

प्रतिध्व

एक

८१

शब्द मौन हैं तेरे आगे, भावुक नीर बहा है।
छल ने छला, रूप ने लूटा, हँसता पाप रहा है॥

मेरे शब्दों में बस बस कर,
मेरा प्यार प्रकट है।
इसी लिये तो मेरे पथ में,
मेरी हार प्रकट है॥

सच बोला तो जग बैरी है,
झूठ तुम्हें कब भाता।
इसी लिये मैं छिपा विश्व से—
तुमको हृदय दिखाता॥

अपने साथ मुझे भी ले चल, तेरा मान महा है।
शब्द मौन हैं तेरे आगे, भावुक नीर बहा है॥

सब के आगे रो रो मैंने,
अपना मर्म दिखाया ।
सब के आगे हृदय चीर कर,
कवि का धर्म सिखाया ॥

किन्तु किसी ने प्यार न जाना,
पीर नहीं पहिचानी ।
इसी लिये तुम सुनो प्राणप्रिय !
मेरी बात पुरानी ॥

मेरी दुनिया मुझसे रूठी, तू भी रूठ रहा है ।
शब्द मौन हैं तेरे आगे, भावुक नीर बहा है ॥

मैं समझता था मुझे पहिचान लोगे ।
मैं तुम्हारा हूँ किसी दिन जान लोगे ॥

किन्तु मेरी कामना ने फल न पाया ।
प्यार का दीपक जला कर फिर बुझाया ॥
आँसुओं की भेंट तो स्वीकार करते ।
भूल से भटके हुए को प्यार करते ॥

तुम मुझे अपना समझ कर दान दोगे ।
मैं समझता था मुझे पहिचान लोगे ॥

मैं अगर रोया मुझे रोने न दोगे ।
मैं अगर खोया मुझे खोने न दोगे ॥
मैं अगर भूला मुझे तुम राह दोगे ।
मैं तुम्हारा हूँ मुझे तुम चाह दोगे ॥

तुम मुझे कोई अनोखी तान दोगे ।
मैं समझता था मुझे पहिचान लोगे ॥

८३

मेरे अभाव की पूर्ति। मुझे मत भूलो।
मेरे मानस की मूर्ति! मुझे मत भूलो॥

मैं तुम्हें खोजने चला,
खो गया पथ में।
मैं तुम्हें जगाने गया,
सो गया पथ में॥

मै भावुकता में भूल,
मुझे मत भूलो।
मैं जग के लिये अछूत,
मुझे तुम छू लो॥

मेरे मानस के हंस! हृदय में झूलो।
मेरे अभाव की पूर्ति। मुझे मत भूलो॥
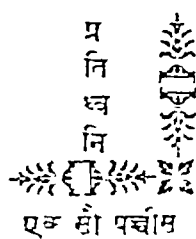
मेरे अन्तर के अर्थ ।
मुझे अपना लो ।
तुम अपना कह कर मुझे,
तनिक शर्मा लो ॥

मेरे घूँघट मे छिपे,
नयन तो खोलो ।
मेरे शब्दों में मुखर,
तनिक तो बोलो ॥

मेरे अभाव की मूर्ति ! मुझे मत भूलो ।
मेरे अभाव की पूर्ति ! मुझे मत भूलो ॥

तुम चले गये कहीं मुझे निहार कर ।
तुम चले गये कहीं मुझे दुलार कर ॥

तुम चले गये कि प्यास पीर बन गई ।
तुम चले गये कि पीर नीर बन गई ॥
जिन्दगी बनी किसी जवान की चिता ।
बुझी न नेत्र-नीर से निशान की चिता ॥

क्यों चले गये कहो, मुझे बिसार कर ।
तुम चले गये कहीं मुझे निहार कर ॥

एक बूँद पी कि प्यास और बढ गई ।
एक बिन्दु सिन्धु की शराब चढ गई ॥
तुम चढा गये नशा उतार कौन दे ।
मैं बिका पड़ा मुझे उधार कौन दे ॥

तुम चले गये कहीं मुझे पुकार कर ।
तुम चले गये कहीं मुझे निहार कर ॥

तुम खरीद कर गये मुझे दुलार से।
तुम न मुक्त हो सके अभी उधार से॥
ले गये उधार अश्रु बार बार तुम।
बार बार दो मुझे उधार प्यार तुम॥

प्यार माँगते रहो उधार प्यार कर।
तुम चले गये कहीं मुझे निहार कर॥

८५

चल रहा राही अकेला ही नहीं,
साथ आँसू का उजाला चल रहा ।

जल रहा दीपक न यह इस रात में,
याद में ढलता वियोगी जल रहा ॥

पीर पथ की सहचरी बन कर चली ।
चूमती है पैर मिट्टी की डली ॥
राह के दोनों किनारे हाथ हैं ।
राह के पत्थर बहुत से साथ हैं ॥

गल रहा राही अकेला ही नहीं,
साथ में हिमगिरि युगों से गल रहा ।

चल रहा राही अकेला ही नहीं,
साथ आँसू का उजाला चल रहा ॥

राह की दूरी न इसके सामने ।
हाय ! मजबूरी न किसके सामने ॥
पर पगों की ओर आँसू ढल रहा ।
भूल कर दूरी बिचारा चल रहा ॥

ढल रहा आँसू अकेला ही नहीं,
सान्ध्य पथ पर सूर्य साथी ढल रहा ।
चल रहा राही अकेला ही नहीं,
साथ आँसू का उजाला चल रहा ॥

साथ में हैं दीप दो जलते हुए ।
हाथ में हैं अश्रु दो ढलते हुए ॥
साथ हैं तारे गगन के रात मे ।
सूर्य साथी बन गया है प्रात मे ॥

चाँद का ससार रजनी मे जला,
सूर्य का ससार दिन मे जल रहा ।
चल रहा राही अकेला ही नही,
साथ आँसू का उजाला चल रहा ॥

चल रहा राही निडर विश्वास पर ।
उड़ सका पक्षी निडर आकाश पर ॥
लक्ष्य तक पथ साथ मे आगे बढा ।
स्वयम् का विश्वास चोटी पर चढा ॥

जो स्वयम् को मान एकाकी रुका,
जिन्दगी अपनी स्वयम् वह छल रहा ।
चल रहा राही अकेला ही नहीं,
साथ आँसू का उजाला चल रहा ॥

राह में जिसकी जवानी आग है ।
राह पर जिसके पगों का दाग है ॥
कौन है जो रोक ऐसे पग सके ।
जिन्दगी वह है कि जिससे पथ थके ॥

जल रहा दीपक अकेला ही नहीं,
शलभ भी जलते अँधेरा जल रहा ।
चल रहा राही अकेला ही नहीं,
साथ आँसू का उजाला चल रहा ॥

८६
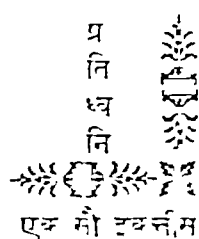
सोच रहा हूँ क्या सूरज से, अन्धकार बरसेगा ।
सोच रहा हूँ क्या सागर ही, पानी को तरसेगा ॥

माँझी नाव डुबा कर डूबे,
कूल डूबता जाता ।
ज्वाला उन पर उठी सिन्धु की,
किसका आँसू गाता ॥

वीणा छोड़ तोड़ मिजराबें,
डमरू कौन बजाता ।
दिन तो निकल रहा है लेकिन,
सूरज ढलता जाता ॥

सोच रहा हूँ क्या उत्सव ही, ताण्डव मे बदलेगा ।
सोच रहा हूँ क्या सूरज से, अन्धकार बरसेगा ॥

क्यों कि धरा से मानवता का,
मधु मिटता जाता है।
क्यों कि दीप जलते हैं लेकिन,
तम घिरता आता है॥

क्यों कि आज डसता जाता है,
सर्प हृदय का काला।
क्यों कि धधकती ही जाती है,
अन्तस्तल की ज्वाला॥

सोच रहा हूँ क्या मनुष्य को, सारा जग तरसेगा।
सोच रहा हूँ क्या सूरज से, अन्धकार बरसेगा॥

पहरेदार। द्वार पर तेरे,
काले चोर खड़े हैं।
ओ ईश्वर। तेरे पैरों में,
आँसू बहुत पड़े हैं॥

मेरे पाप भूल जा भोले।
गंगाजल बरसा दे।
आज अभावों का विष पीकर,
पग से धरा उठा दे॥

सोच रहा हूँ क्या मानव ही, मानव को डस लेगा।
सोच रहा हूँ क्या सूरज से, अन्धकार बरसेगा॥
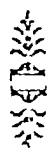
मिट्टी का मनुष्य दुनिया मे, हँसता रोता गाता ।
पल मे हँसता, पल में रोता, पल मे मुरझा जाता ॥

संसृति के सुहाग की बिन्दी, सदा अमर रहती है ।
उठते मिटते बुदबुद बहते, धार सदा बहती है ॥
दुःख और सुख के ये बुदबुद, पानी मे बहते हैं ।
जग-मेले में जलते दीपक, दो दिन को रहते हैं ॥

उत्तर सदा अधूरा रहता, प्रश्न शेष रह जाता ।
मिट्टी का मनुष्य दुनिया मे, हँसता रोता गाता ॥

कौन हँसाता, कौन रुलाता, कौन भुलावा देता ।
नश्वरता के रंगमहल से, कौन बुलावा देता ॥
किसने जग का खेल बनाया, किसने खेल बिगाड़ा ।
क्यों ये फूल खिलाये किसने, क्यों फिर स्वर्ग उजाड़ा ॥

पास बुला कर प्यार सुँघा कर, क्यों फिर तोड़ा नाता ।
मिट्टी का मनुष्य दुनिया में, हँसता रोता गाता ॥

मरण से मुझे मुक्त कर दो।
चरण से मुझे मुक्त कर दो॥

वियोगी को योगी कर दो।
विरह में नयी भक्ति भर दो॥
मुझे तुम दे दो इतना रस।
हार कर कह दूँ बस बस बस॥

राह में तुम दीपक धर दो।
मरण से मुझे मुक्त कर दो।
चरण से मुझे मुक्त कर दो॥

दीप मेरे बन जाओ तुम।
गीत उस स्वर में गाओ तुम॥
बाँसुरी जिस स्वर में बोली।
बनी पगली राधा भोली॥

चरण तुम पत्थर पर धर दो।
मरण से मुझे मुक्त कर दो।
चरण से मुझे मुक्त कर दो॥

८६
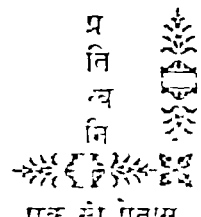
रेखाओं में उस आकृति का, चित्र न चित्रित होता।
इधर तूलिका रेखा रचती, उधर नयन जल धोता॥

चित्र अधूरा रह जाता है,
पूरा किस दिन होगा।
या मैं ही उस दिन न रहूँगा,
पूरा जिस दिन होगा॥

कितनी रेखाओं में उसकी,
रेखा एक बनाई।
उसकी एक मधुर रेखा ने,
मेरी प्यास बढ़ाई॥

रहा खींचता रेखा प्रतिपल, प्रतिपल सुमन पिरोता।
रेखाओं में उस आकृति का, चित्र न चित्रित होता॥

उसका रूप अनोखा जिसमे,
रूप सभी मिल जाते ।
वह ऐसी मुस्कान कि जिससे,
फूल सभी खिल जाते ॥

उसी राशि की एक रश्मि का,
रूप बन गया यह जग ।
उड़ता हुआ ढूँढता रहता,
उसको विवश हृदय-खग ॥

जाने कैसी मधुर नींद में, मेरा मोहक सोता ।
रेखाओं में उस आकृति का, चित्र न चित्रित होता ॥

९०
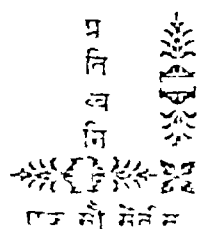
यह पूजा की वेला ।
तू, तेरा भगवान साथ है, मन्दिर मे है मेला ॥

इस मेले में रूप अमर है ।
यह अमरों का अमर नगर है ॥
इसमें सुख की खुली डगर है ।
फिर क्यों तेरी अगर मगर है ॥

तेरे अन्तर में अखिलेश्वर, फिर क्यों बना अकेला ।
तू, तेरा भगवान साथ है, मन्दिर मे है मेला ।
यह पूजा की वेला ॥

जीवन की बटिया पर चल तू ।
जग में दीप शलभ बन जल तू ॥
तुझ में ही तेरा प्रकाश है ।
तुझ में ही तेरा विकास है ॥

तेरे श्वासों के मेले मे मृदु भावों का रेला ।
तू, तेरा भगवान साथ है, मन्दिर मे है मेला ।
यह पूजा की वेला ॥

९१

तुझे रिझाने को खेलूँ मै ।
खेल खेल कर जीवन-जल मे, प्रिय ! अपनी नौका खे लूँ मै ॥

मुझ को अपने खेल सिखादो ।
मुझ को मेरा दीप दिखादो ॥
मेरा खेल बिगड़ जाता है ।
तेरा खेल मुझे भाता है ॥

दे दे मुझे खिलौने ऐसे, जिनसे नये खेल खेलूँ मै ।
प्रिय ! तेरी माला ले लूँ मै ॥
खेल खेल कर जीवन-जल में, प्रिय ! अपनी नौका खे लूँ मै ।
तुझे रिझाने को खेलूँ मै ॥

तू खेले, मै तुझे निहारूँ ।
प्रिय ! तुझ पर तन मन धन वारूँ ॥
तू है मेरा अमर खिलौना ।
मै तेरा छोटा सा बौना ॥

तेरे पैर पकड़ कर प्रियतम ! तेरा सरल रूप ले लूँ मैं ।
तेरे साथ साथ खेलूँ मै ॥
खेल खेल कर जीवन-जल मे, प्रिय ! अपनी नौका खे लूँ मै ।
तुझे रिझाने को खेलूँ मै ॥

प्रतिध्वनि

९२
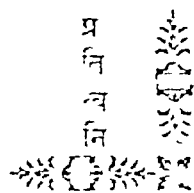
सरल तुम इतने बनो, गरल भी मुझको सरल बने।
धवल! तुम मेरे रहो, मलिन मन मेरा धवल बने॥

ज्योति तुम मेरी अमर,
तिमिर मैं जग का पान करूँ।
न जग में ज्वाला रहे,
शब्द-घन ऐसे दान करूँ॥

सरल! तुम मुझको मिलो,
फूल कुछ जग में नये खिलें।
दूर! तुम मुझ में रहो,
कूल दो बिछुडे हुए मिलें॥

तार तुम मेरे बनो, प्यार प्रिय! इतना तरल बने।
सरल तुम इतने बनो, गरल भी मुझको सरल बने॥

प्रीति के सहचर ! सुनो,
  प्रीति का लक्षण सरल करो ।
तमिस्रा काली हटे,
  सत्य ! तुम मेरा असत हरो ॥

अमृत मैं मथ लूँ स्वयम् ,
  स्वयम् का यह वरदान मिले ।
वरण मैं तुमको करूँ,
  मुझे प्रिय ! यह अभिमान मिले ॥

पंक पर जीवन उगे, किन्तु यह जीवन कमल बने ।
सरल तुम इतने बनो, गरल भी मुझको सरल बने ॥

प्रतिध्वनि

९३

तुम छेड़ो ऐसा गीत, तान मैं जिसकी पकड़ चलूँ ।
तुम दे दो ऐसी भक्ति, पगों मे गल गल अर्घ्य ढलूँ ॥

गीत के स्वर पर धर कर हाथ ।
चलूँ तेरे घर तेरे साथ ॥
अधर धर धरूँ प्रीति की प्यास ।
अमर ! मेरा तुम पर विश्वास ॥

तुम दीपक मेरे बनो और मैं बन कर शलभ जलूँ ।
तुम छेड़ो ऐसा गीत, तान मैं जिसकी पकड़ चलूँ ॥

भाव मैं जटिल और तुम अर्थ ।
हाथ मत झटको अरे समर्थ ।
मुझे भी ले चल इतनी दूर ।
बसा तू जाकर जितनी दूर ॥

तुम गाओ दीपक राग और मै दीपक बुझा जलूँ ।
तुम छेड़ो ऐसा गीत, तान मै जिसकी पकड चलूँ ॥

विषमता समता मे बदलो ।
सत्य ! सुरभित कर दो संसृति,
हँसा कर मानस मे हँस लो ॥

शिव में विष बदलो भोले भगवान !
शिव ! तुम बन जाओ अन्तर के गान ॥
आशामृत भर दो निराश में देव ।
करने दो पूजा प्रकाश मे देव ।

भाव हों एकाकार सरस,
हृदय का दूषित विष डस लो ।
विषमता समता में बदलो ॥

छेड़ो मत ताण्डव, छेड़ो वह तान ।
जिसको सुन बदले मानव का ध्यान ॥
शब्दो में मुरली, वीणा बज उठे ।
बरसे जय, जीवन हो, जग सज उठे ॥

छीन लो गरल, नित्य मधु दो,
नयन में नयन ज्योति हँस लो ।
विषमता समता में बदलो ॥
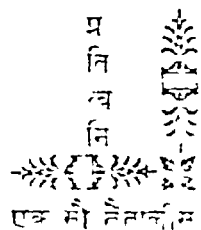
सुप्त भावों को जगाने के लिये,
मधुर मुरली की नयी झनकार दो।
अमृत! अपने गीत गाने के लिये,
तुम मुझे अपने सुरीले तार दो॥

गीत गाना चाहता तेरे लिये।
जल रहे हैं आरती के दो दिये॥
अर्घ्य बन आँसू पगों मे ढल लिये।
तू मिले इस चाह मे अब तक जिये॥

मैं तुम्हारे द्वार पर कब का खड़ा,
पार जाने के लिये पतवार दो।
सुप्त भावों को जगाने के लिये,
मधुर मुरली की नयी झनकार दो॥

चाह की दुर्मति सुलाना चाहता।
बात मैं पिछली भुलाना चाहता॥
सत्य! तेरी चाह जागे हृदय मे।
तू मिले मुझको मनुज की विजय में॥

मै बढा मस्तक पगों मे धर मरूँ,
तुम मुझे ऐसा सरल विस्तार दो।
सुप्त भावों को जगाने के लिये,

उस समय सब पास मेरे थे खड़े,
रोकता आँसू सभी को रह गया ।

जब कि आई मौत लेने के लिये,
आँख से आँसू निकल कर बह गया ॥

ले गई जाने कहाँ वह जिन्दगी ।
ढूँढती किसको यहाँ यह जिन्दगी ॥
ढूँढते ही ढूँढते मै चल बसा ।
कौन रोया ! कौन जीवन में हँसा ॥

देख लो यह अन्त है सम्राट का,
हर पथिक जाता हुआ यह कह गया ।

उस समय सब पास मेरे थे खड़े,
आँख से आँसू निकल कर बह गया ॥

दीप बुझने को हुआ तो लौ बढ़ी ।
प्यार की मुस्कान यौवन पर चढ़ी ॥
किन्तु पल में दीप टिम टिम भी हुआ ।
प्यार पर अन्याय अन्तिम भी हुआ ॥

रह गये सब हाथ मलते ही यहाँ,
मूँद दृग लाचार राही कह गया ।

उस समय सब पास मेरे थे खड़े,
आँख से आँसू निकल कर बह गया ॥

घिरी है रात, उठे तूफान, किन्तु मै दीपक लिये चला ।
सो गये सभी, खो गये सभी, किन्तु मै सारी रात जला ॥

दूर है लक्ष्य, रोकते सभी,
किन्तु मै चलता ही जाता ।
राह के शूल, दूर की धूल,
पगो से मलता ही जाता ॥

नहीं है नाव, नहीं पतवार,
क्यों कि यह बड़ी परीक्षा है ।
हार है बड़ी, या कि है जीत,
आज यह बड़ी समीक्षा है ॥

चुनौती तुम्हें बुझाओ दीप, पगों में बल का दीपक बला ।
घिरी है रात, उठे तूफान, किन्तु मैं दीपक लिये चला ॥

सामने कूल, खिले वे फूल,
सुरभि मे बसने जाता हूँ ।
रोक मॅझधार, रोक ओ 'इन्द्र' !
देख मै दौड़ा आता हूँ ॥

अँधेरा बढा, चढ़ाई शेष,
चॉद चढता ही जाता है ।
हृदय मे आग, सवेरा लिये,
सूर्य मुस्काता आता है ॥

जलज जल में ज्वाला से खिले, विरह में दिन भर दिनकर जला।
घिरी है रात, उठे तूफान, किन्तु मैं दीपक लिये चला ॥

न जाने कौन, कह रहा मौन,
अरे मत सुन जग की बातें ।
रात के दीपक हैं नक्षत्र,
चॉद को भाती हैं रातें ॥

उठा यह किसके मन में प्रश्न,
रूप क्यों सारी रात जले ।
अँधेरा उसके लिये प्रकाश,
उजाला जिसके साथ चले ॥

चॉदनी में सोया संसार, विजय का नभ में दीप जला ।
घिरी है रात, उठे तूफान, किन्तु मै दीपक लिये चला ॥

प्र
ति
ध्व
नि
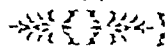
अँधेरी राह मे यदि साथ तुम होते,
न होती रात जीवन मे ।
अँधेरी रात मे यदि साथ तुम रोते ॥

अकेला चल रहा हूँ दूर जाना है ।
अर्चना शेष है दीपक जलाना है ॥
पता था क्या कि तुम भी साथ छोड़ोगे ।
डूबते को पकड़ कर हाथ छोड़ोगे ॥

अगर मै खो गया था तुम नही खोते,
अँधेरी राह में यदि साथ तुम होते,
न होती रात जीवन मे ।
अँधेरी रात मे यदि साथ तुम रोते ॥

गये तुम, हार मेरी हो गई भारी ।
सुनहरी स्वप्न बीते कल्पना हारी ॥
तुम्हारे गीत गाता आ रहा हूँ मै ।
तुम्हारी अर्चना मे गा रहा हूँ मै ॥

गये तुम किन्तु आँखों मे रहे सोते,
अँधेरी राह मे यदि साथ तुम होते,
न होती रात जीवन मे ।
अँधेरी रात मे यदि साथ तुम रोते ॥

६६

क्यों तिमिर की प्यास दीपक को बढ़ी,
क्यों पतंगा दीप पर जल कर मरा।
आग से जो प्यार कर सकता नहीं,
जिन्दगी मे क्या भला उसकी धरा॥

आग का प्यासा पतंगे का हृदय।
कब अँधेरे से डरा कोई अभय॥
दीप जलता है मगर मुस्का रहा।
हँस तिमिर तू भी! उजाले ने कहा॥

जल रहा है स्नेह अन्तर मे तरल,
क्यों जलन का स्वाद दीपक मे भरा।
क्यों तिमिर की प्यास दीपक को बढ़ी,
क्यों पतगा दीप पर जल कर मरा॥

जो पतगे की तरह जलता नहीं।
दीप सा जो रात में जलता नहीं॥
वह तिमिर-विष-पान क्या जाने भला।
इस लिये मेरा हृदय जग में जला॥

जो न जलता सूर्य औरों के लिये,
किस तरह जग का जलज होता हरा।
क्यों तिमिर की प्यास दीपक को बढ़ी,
क्यों पतगा दीप पर जल कर मरा॥

तब तक मेरी पूजा असफल, जब तक तुम्हें न पाऊँ ।
जिस दिन गिरूँ धरा पर उस दिन, चरणों मे गिर जाऊँ ॥

मेघों के सौन्दर्य मनोहर !
दीप न बुझने पाये ।
मिटे न स्नेह कभी दीपक का,
ज्वाला पी पी जाये ॥

मेरी ज्वाला में प्रकाश हो,
छवि आँखों में नाचे ।
परिवर्तित कल्पित सुन्दरता,
तेरी गीता बाँचे ॥

राह न छीनो तो मैं तुम तक गिरता पड़ता आऊँ ।
तब तक मेरी पूजा असफल, जब तक तुम्हे न पाऊँ ॥

अन्धा पग पग पर गिरता है,
राह तुम्हारी खोयी ।
टेढ़ी मेढ़ी पगडण्डी पर,
भूल भटक कर रोयी ॥

मैं तुम में मिल जाऊँ प्रियतम !
तुम मुझ में मिल जाओ ॥
मेरे अन्तर के शिव रीझो,
मेरे स्वर में गाओ ॥

पूजा सफल करो निर्धन की, चरणों में चढ जाऊँ ।
तब तक मेरी पूजा असफल, जब तक तुम्हे न पाऊँ ॥
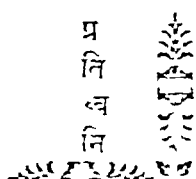
अर्चना का दीप जलता ही रहा,
पर नही आराध्य ने खोले नयन ।
लोचनों से अर्घ्य ढलता ही रहा,
पर नही सौन्दर्य के बोले नयन ॥

दीप पूजा का जलाया इस लिये,
तुम मिलोगे अर्चना होगी सफल ।
रात दिन बरसात तो होती रही,
किन्तु मेरी प्यास मे ज्वाला प्रबल ॥

मिल गया मन्दिर न तुम मुझको मिले,
देव ! तुमको ढूँढता ही रह गया ।
हार मेरी है न हारी अर्चना,
राह मे गल गल जलद बन बह गया ॥

अर्चना के फूल चढते ही रहे,
और पलकें झल रही हर पल व्यजन ।
अर्चना का दीप जलता ही रहा,
पर नही आराध्य ने खोले नयन ॥

ार

६)
खा हुआ

रक

ी रच

पग